INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

RAS

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

भाग-1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

(Rajasthan Administrative Service)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – I

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) Pre.**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Order Link - https://bit.ly/ras-pre-notes

WhatsApp Link- https://wa.link/6r99q8

Contact Us - 8233195718, 9694804063,7014366728,8504091672

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का इतिहास

1. राजस्थान इतिहास के स्रोत 1

2. प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं) 26

- पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक

3. ऐतिहासिक राजस्थान 40

- प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति

4. प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां 48

- गुहिल
- प्रतिहार
- चौहान
- परमार
- राठौड़
- सिसोदिया
- कच्छावा

5. मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था 124

6. आधुनिक राजस्थान 144

7. राजनीतिक जागरण 166

- समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका

8. राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन 174

9. विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन 187

10. राजस्थान का एकीकरण 203

कला एवं संस्कृति

1. राजस्थान की वास्तु परम्परा 210

- मंदिर
- किले
- महल

2. चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प 256

3. प्रदर्शन कला 280

- शास्त्रीय संगीत
- शास्त्रीय नृत्य,
- लोक संगीत एवं वाद्ययन्त्र
- लोक नृत्य एवं नाट्य

4. भाषा एवं साहित्य 324

5. धार्मिक जीवन 341

- धार्मिक समुदाय
- राजस्थान में संत संप्रदाय

6. राजस्थान के लोक देवी - देवता 353

7. राजस्थान में सामाजिक जीवन - मेले एवं त्यौहार 366

8. सामाजिक रीति रिवाज, परम्पराएँ 380

9. वेशभूषा एवं आभूषण 387

10. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 391

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

राजस्थान इतिहास के स्रोत

परिचय –

सामान्यतः इतिहासकार द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।
इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

> हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई. पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका थी।

इतिहास का अध्ययन : –
इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -
1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल –

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं। इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं। इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है। जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।
प्राचीन इतिहास के स्रोत – पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत।

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**
  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है। भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं।
  महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय संहिता" था।
- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं। वे 1818 से 1822 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।

- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।

- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :-

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले है।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।
- शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है।

मानमोरी का अभिलेख :-

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में **'अमृत मंथन'** का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डौर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है।

संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।

- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है ।

कणसवा का अभिलेख :-

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।
- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है।**

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- 955 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चाचिगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में **'बापा'** से **'महाराणा समरसिंह'** तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

किराडू का लेख :-

- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

सांडेराव का लेख :-

- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर में उत्कीर्ण है।
- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख में उस समय के विभिन्न करों व भूमि की नाप के बारे में जानकारी मिलती है।

शृंगी ऋषि का लेख :-

- 1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास शृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के रचनाकार **'कविराज वाणीविलास योगेश्वर'** थे एवं उत्कीर्णकर्ता हदा के पुत्र पन्ना थे।
- यह महाराणा मोकल के समय का है जिसमें राणा हम्मीर से मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस लेख में महाराणा मोकल द्वारा एकलिंगजी मंदिर के चारों ओर दीवार बनवाने तथा नागौर शासक फिरोज खाँ एवं गुजरात शासक अहमद खाँ को युद्ध में पराजित करने का उल्लेख है।
- इस लेख में राणा लाखा द्वारा काशी, प्रयाग व गया (त्रिस्थली) की यात्रा करने का उल्लेख भी मिलता है।

आमेर का लेख :-

- 1612 ई. में संस्कृत तथा नागरी भाषाओं में उत्कीर्ण इस लेख से कच्छवाहा शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस लेख में कच्छवाहा वंश को **'रघुवंश तिलक'** कहा गया है।
- इस लेख में निजाम शब्द को प्रांतीय विभाग के रूप में उल्लेखित किया गया है।
- **इसमें मानसिंह को भगवन्तदास का पुत्र बताया गया है।**

बरबथ का लेख :-

- 1613-14 ई. के इस लेख में मुग़ल शासक अकबर की पत्नी मरियम-उज-ज़मानी द्वारा निर्मित बरबथ बाग एवं बयाना बावड़ी का उल्लेख मिलता है। **यह मुग़ल राजपूत वैवाहिक संबंध का बोध कराता है।**

- इस शिलालेख की भाषा संस्कृत एवं लिपि कुटिल है। वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।
- **डॉ. ओझा ने इसे अजमेर संग्रहालय में रखवाया**

घोसुण्डी शिलालेख :-

- यह शिलालेख चित्तौड़गढ़ जिले के नगरी के निकट घोसुण्डी गाँव से प्राप्त हुआ।
- इस शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. डी.आर. भण्डारकर द्वारा खोजा गया / पढ़ा गया था।
- यह राजस्थान में वैष्णव सम्प्रदाय (भागवत् सम्प्रदाय) से सम्बन्धित सबसे प्राचीन शिलालेख है।
- यह शिलालेख लगभग 200-150 ई. पूर्व के लगभग का है तथा इससे यह जानकारी मिलती है कि इस समय राजस्थान में वैष्णव सम्प्रदाय लोकप्रिय हो चुका था।
- घोसुण्डी शिलालेख की लिपि ब्राह्मी एवं भाषा संस्कृत है।
- घोसुण्डी शिलालेख का महत्व भागवत् धर्म के प्रचार, वासुदेव की मान्यता और अश्वमेघ यज्ञ के प्रचलन के कारण अधिक है।
- घोसुण्डी शिलालेख में गजवंश के सर्वतात द्वारा अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख मिलता है।
- यह ब्राह्मी तथा संस्कृत दोनों भाषाओँ में है ।

प्रश्न- अभिलेख, जो प्राचीन राजस्थान में भागवत सम्प्रदाय के प्रभाव की पुष्टि करता है? (RAS-2016)

(1) घटियाला अभिलेख

(2) हेलियोदोरस का बेसनगर अभिलेख

(3) बुचकला अभिलेख

(4) घोसुण्डी अभिलेख

Ans. 4

चित्तौड़ का शिलालेख (1438 ई.) :-

- 1438 ई. में काले पत्थर पर उत्कीर्ण यह लेख चित्तौड़ के सतबीस देवरी से प्राप्त हुआ है जिसमें 104 श्लोक हैं ।
- इस लेख में मेवाड़ शासक राणा हम्मीर से महाराणा मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है तथा हम्मीर को तुर्को को जीतने वाला बताया गया है।
- इस लेख में गुजरात बादशाह के दरबारी गुणराज द्वारा भीषण अकाल में अपनी सम्पत्ति जनता की सहायता के लिए खर्च करने का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति का रचनाकार चरित्ररत्न गणि तथा उत्कीर्णकर्ता नारद था।

बिजौलिया शिलालेख :-

- 1170 ई. का यह शिलालेख बिजौलिया के पार्श्वनाथ मंदिर के पास एक चट्टान पर जैन श्रावक लोलाक द्वारा बनवाया गया।
- इस शिलालेख में सांभर तथा अजमेर के चौहानों को वत्सगौत्रीय ब्राह्मण बताया गया है तथा उनके वंशक्रम एवं उपलब्धियों का उल्लेख किया गया है।
- इस शिलालेख का रचयिता गुणभद्र था। इसमें 93 संस्कृत पद्य है। इस शिलालेख के लेखक कायस्थ केशव एवं उत्कीर्णकर्त्ता गुणभद्र है ।
- इस लेख में मेवाड़ में बहने वाली कुटिला नदी का उल्लेख है।
- इस अभिलेख में वासुदेव द्वारा शाकंभरी में चौहान वंश की स्थापना करने तथा सांभर झील बनवाने का उल्लेख है। इसके अनुसार वासुदेव ने अहिछत्रपुर (नागौर) को अपनी राजधानी बनाया।
- इस लेख में कई क्षेत्रों के प्राचीन नाम दिये गये है - जैसे -जाबालिपुर (जालौर), श्रीमाल (भीनमाल), शाकंभरी (सांभर) आदि।
- यह मूलतः दिगम्बर लेख है।

बुचकला शिलालेख (815 ई.) :-

- बुचकला गाँव (जोधपुर) जिले में बिलाड़ा तहसील के समीप पार्वती मंदिर में स्थित इस शिलालेख से प्रतिहार शासक वत्सराज के पुत्र नागभट्ट के बारे में जानकारी मिलती है।
- यह लेख संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध है ।

हस्तिकुण्डी शिलालेख (996 ई.) :-

- सिरोही जिले से प्राप्त इस शिलालेख के रचयिता सूर्याचार्य थे। इस शिलालेख की खोज कैप्टन बस्ट ने की।

रैढ़ (टोंक) से प्राप्त सिक्के :-

- रैढ़ में उत्खनन से 3075 चाँदी के पचंमार्क सिक्के मिले है जो देश में उत्खनन से प्राप्त सिक्कों की सर्वाधिक संख्या है।
- ये सिक्के मौर्यकाल के है जिन्हें 'धरण' या 'पण' कहा जाता था।
- इन सिक्कों का वजन 57 ग्रेन (32 रती या $3^{3}/_{4}$ ग्राम) है तथा इनका समय छठी शताब्दी ई. पूर्व से द्वितीय शताब्दी ई. पूर्व है ।
- रैढ़ से प्राप्त इन सिक्कों को मालव, मित्र, इण्डो सेसेनियम, सेनापति आदि वर्गों में रखा गया है।
- रैढ़ सभ्यता पर उत्खनन का कार्य 1938-39 में दयाराम साहनी के नेत्तृत्व में तथा अंतिम रूप में उत्खनन कार्य डॉ. केदारनाथ पूरी के द्वारा करवाया गया था ।
- रैढ़ सभ्यता से एशिया का अब तक का सबसे बड़ा सिक्कों का भण्डार मिला है ।

बैराठ से प्राप्त सिक्के :-

- बैराठ में उत्खनन से कपड़े में बंधी हुई 8 आहत मुद्राएँ प्राप्त हुई है।
- इसके अलावा यहाँ से 28 इण्डो-ग्रीक तथा यूनानी मुद्राएँ प्राप्त हुई है जिसमें से 16 सिक्के यूनानी शासक मीनेण्डर के है।

प्रश्न- निम्नलिखित में से किस स्थल से शासक मिनेण्डर के सोलह सिक्के प्राप्त हुए हैं ?(RAS. 2018)

(1) बैराठ **(2) नगरी**

(3) रैढ़ **(4) नगर**

Ans. 1

रंगमहल से प्राप्त सिक्के :-

- रंगमहल (हनुमानगढ़) से 105 ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए है जिनमें आहत तथा कुषाण कालीन मुद्राएँ शामिल है।
- यहाँ से प्राप्त कुषाण कालीन सिक्कों को मुरण्डा कहा गया है।
- रंगमहल से कुषाण शासक कनिष्क का भी सिक्का प्राप्त हुआ है।

सांभर से प्राप्त सिक्के :-

- सांभर (जयपुर) में उत्खनन से 200 मुद्राएँ प्राप्त हुई है जिनमें पंचमार्क तथा इण्डो सेसेनियम मुद्राएँ शामिल है।
- सांभर के उत्खनन में चाँदी की एक इण्डो-ग्रीक मुद्रा मिली है जो 'एंटीयोकस निकेफोरस' की है ।
- यहाँ से यौधेय जनपद की तथा इण्डो-ग्रीक मुद्राएँ भी प्राप्त हुई है। एक यौधेय सिक्के पर ब्राह्मी लिपि में **'बाबुधना'** तथा 'गण' अंकित है।

नगर (टोंक) से प्राप्त सिक्के :-

- टोंक जिले के नगर या कर्कोट नगर से कार्लाइल को लगभग 6 हजार ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए थे।
- यह अनुमान लगाया जाता है कि मालव जनपद की टकसाल नगर में रही होगी।
- ये सिक्के अन्य सिक्कों की तुलना में सबसे छोटे तथा हल्के है।
- इन पर ब्राह्मी लिपि में मालव जनपद के लगभग 40 सरदारों के नाम अलग-अलग अंकित मिलते है ।

यौधेय जनपद के सिक्के :-

- राजस्थान के प्राचीन समय के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित यौधेय जनपद से सिक्के मिले है।
- इन सिक्कों पर नंदी एवं स्तंभ का अंकन तथा ब्राह्मी लिपि में 'यौधेयानां बहुधान' लिखा हुआ मिला है।
- ईसा की दूसरी सदी के सिक्कों पर एक ओर कमल पर षडानन की मूर्ति तथा दूसरी ओर ब्राह्मी लिपि में 'भागवत: यौधेयेन' अंकित है। चौथी सदी ईसा के सिक्कों में 'कार्तिकेय' या 'देव' या 'सूर्य की मूर्ति' का अंकन मिलता है ।

गुप्तकालीन मुद्राएँ :-

- 1948 में भरतपुर जिले की बयाना तहसील के नगलाछैल गाँव से सर्वाधिक गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त हुई है जिनकी संख्या लगभग 1800 है।
- इन सिक्कों में सर्वाधिक सिक्के 'चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य' के समय के है ।
- इसके अलावा राजस्थान में बुन्दावली का टीबा (जयपुर), नलियासर (सांभर), ग्राम-मारोली (जयपुर), रैढ़ (टोंक), अहेड़ा (अजमेर), देवली

(टोंक) तथा सायला आदि से गुप्तकालीन मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं।

- सायला से समुद्रगुप्त की 13 स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त हुई है जिनके अग्रभाग पर समुद्रगुप्त ध्वज लिए खड़ा है। ये सिक्के **ध्वज शैली** के हैं।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के **छत्र शैली** के स्वर्ण के सिक्के मिले हैं जिनसे यह संकेत मिलता है कि टोंक के आस-पास का क्षेत्र गुप्त साम्राज्य का अंग रहा होगा।
- सायला से ही चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के धनुर्धर शैली के सिक्के भी मिले हैं।

गुर्जर-प्रतिहार कालीन मुद्राएँ :-

- मारवाड़ क्षेत्र से प्राप्त गुर्जर प्रतिहार कालीन सिक्कों पर से सेसेनियन शैली का प्रभाव दिखाई देता है।
- राजस्थान में गुर्जर प्रतिहार शासक मिहिर भोज तथा विनायकपाल देव के 'आदिवराह द्रम्म' नामक सिक्के प्राप्त हुए हैं।
- ठक्कर फेरू (अलाउद्दीन की दिल्ली टकसाल का अधिकारी) ने अपनी पुस्तक 'द्रव्य परीक्षा' में इन सिक्कों को वराही द्रम्म एवं विनायक द्रम्म नाम दिया है। जिन पर देवनागरी लिपि में 'श्री मदादि वराह' एवं नरवराह की मूर्ति का अंकन है।
- प्रतिहारों के आदिवराह, वराहनाम वाले द्रम्म तथा देवी मूर्ति, वृषभ, मत्स्य एवं अश्वारोही अंकन वाले सिक्के भी मिले हैं।
- मारवाड़ से अनेक गुर्जर-प्रतिहार कालीन ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं। इन पर राजा के अर्द्ध शरीर का चिह्न तथा यज्ञकुण्ड बना है, इन पर ये चिह्न अस्पष्ट होने के कारण गधे के मुँह के समान अंकन दिखाई देता है इसलिए इनका नाम 'गधिया सिक्के' पड़ा है।

चौहान काल की मुद्राएँ :-

- राजस्थान में चौहान काल के चाँदी व ताँबे के सिक्के मिले हैं जिन्हें **'द्रम्म'**, **'विशोपक'**, **'रूपक'**, **'दीनार'** आदि के नाम से जाना गया।
- अजयदेव चौहान की रानी सोमलेखा द्वारा चाँदी के सिक्के एवं सोमेश्वर द्वारा वृषभ शैली एवं अश्वारोही शैली के सिक्के चलाए गए।
- तराइन के दूसरे युद्ध में विजय के बाद "मुहम्मद गौरी" ने सिक्कों पर अपना नाम 'मुहम्मद बिन साम' अंकित करवाया। इसके अलावा इन सिक्कों पर 'नंदी' तथा 'पृथ्वीराज ' के नाम का अंकन मिलता है।
- इसके अलावा सिक्कों के अतिरिक्त पृष्ठ पर देवनागरी में हम्मीर का नाम भी अंकित करवाया गया है।

मेवाड़ राज्य के सिक्के :-

- मेवाड़ में प्राचीन काल से ही सोने, चाँदी एवं ताँबे के सिक्के चलते थे जो इण्डो-सेसेनियन शैली के थे।
- चाँदी के सिक्कों को 'द्रम्म' व 'रूपक' तथा ताँबे के सिक्कों को 'कार्षापण' कहा जाता था।
- पुराने सिक्कों पर कोई लेख नहीं होता था। इसी प्रकार ताँबे का सिक्का 'ढींगला' है।
- नगरी से प्राप्त चाँदी व ताँबे के सिक्कों पर एक ओर 'शिवि जनपद' अंकित है। यहीं से यूनानी शासक मिनेण्डर के 'द्रम्म' सिक्के भी मिले हैं।
- मेवाड़ के कई स्थानों से हूणों द्वारा चलाए गए चाँदी व ताँबे के गधिया सिक्के मिले हैं।
- गुहिल वंश के संस्थापक गुहिल द्वारा जारी दो हजार चाँदी के सिक्के आगरा से प्राप्त हुए हैं।
- मालवा परमार शासकों द्वारा प्रचलित चाँदी के 'पारुथ द्रम्म' सिक्के भी मेवाड़ से प्राप्त हुए हैं।
- मेवाड़ में 'मुहम्मद बिन साम' तथा सुरातिन समस्दीन नाम वाले सिक्के तथा अश्वारोही-नंदी शैली के सिक्के प्रचलित थे। इन सिक्कों को टका एवं दिरहम नाम से जाना जाता था।
- महाराणा स्वरूपसिंह ने अंग्रेजों से संधि कर स्वरूपशाही सिक्के चलाये जिनके एक तरफ चित्रकुट-उदयपुर व चित्तौड़दुर्ग की प्राचीर के चित्र का अंकन है तथा दूसरी ओर **'दोस्ती-लंधन'** अर्थात् (लंदन के मित्र) अंकित था। इनके समय चांदोड़ी स्वर्ण मुहर भी प्रचलित थी।
- स्वरूप शाही मुहर का वजन 100 ग्रेन होता था।
- मेवाड़ में उदयपुरी, चित्तौड़ी, भीलाड़ी एवं एलची सिक्के मुग़ल प्रभाव वाले सिक्के थे।
- चित्तौड़ी की टकसाल में मुग़ल सम्राट अकबर एवं अन्य मुग़ल सम्राटों के सिक्के भी बनते थे जिन्हें 'सिक्का एलची' कहते थे।
- मेवाड़ में प्रचलित ताँबे के सिक्कों को ढींगला, भिलाड़ी, त्रिशुलिया, भींडरिया एवं नाथद्वारिया आदि नामों से जाना जाता था।

- शाहपुरा में बनने वाले सोने-चाँदी के सिक्के ग्यारसंदा तथा ताँबे के सिक्के माधोशाही कहलाते थे।
- मेवाड़ के सलूम्बर ठिकाने का सिक्का पद्मशाही नाम से जाना जाता था।
- महाराणा भीमसिंह द्वारा अपनी बहिन चंद्रकुंवरी की स्मृति में चांदोडी रुपया, अठन्नी, चवन्नी, एक अन्नी, दो अन्नी के सिक्के जारी किए गए।

मारवाड़ के सिक्के :-

- 1780 ई. में मारवाड़ शासक विजयसिंह ने 'विजयशाही' सिक्कों का प्रचलन किया जिन पर मुग़ल प्रभाव दिखाई देता है।
- मुग़लकाल में मारवाड़ में जोधपुर, पाली, नागौर तथा सोजत में टकसालें थी। 178। में जोधपुर टकसाल में शुद्ध सोने की मुहर बनने लगी।
- सोजत की टकसाल के सिक्के ढब्बूशाही एवं भीमशाही कहलाते थे इन पर पहले शाहआलम तथा 1858 के बाद **विक्टोरिया** के नाम नाम अंकित होते थे।
- ताँबे के विजयशाही सिक्कों पर हिजरी सन्, दारुल मंसूर जोधपुर तथा 'जुलूस मैमनत मानूस जर्ब अंकित होते थे। इन सिक्कों पर झाड़ (लुरां) एवं तलवार के चिह्न भी बनते थे जिन्हें तुर्रा एवं खाँडा कहते थे।
- जोधपुर के ताँबे के सिक्के भारी होने के कारण 'ढब्बूशाही' एवं 'भीमशाही' कहलाते थे। इन सिक्कों पर औरंग आराम हिंद एवं इंग्लिस्तान क्वीन विक्टोरिया अंकित होता था।
- मारवाड़ के आलमशाही सिक्कों पर मुग़ल प्रभाव दिखाई देता है।
- 1900 ई. में जोधपुर की टकसालों में विजयशाही सिक्के बनना बन्द हो गया तथा अंग्रेजी कलदार रुपया प्रचलन में आया।
- जोधपुर के सिक्कों पर तलवार व झाड़ को राजचिह्न के रूप में अंकित किया जाता था।
- महाराजा तख्तसिंह के समय जोधपुर टकसाल के मुखिया अनाड़सिंह ने सिक्कों पर अपना निशान 'रा' अंकित किया तथा ये सिक्के 'रुरिया' सिक्के कहलाये।

बीकानेर राज्य के सिक्के :-

- मुग़ल बादशाह आलमगीर द्वितीय ने महाराजा गजसिंह को सिक्के ढालने की अनुमति प्रदान की।
- 1759 ई. के लगभग बीकानेर टकसाल से शाहआलम के चाँदी के सिक्के ढाले जाने आरम्भ हुए जो 1859 तक प्रचलन में रहे।
- बीकानेर के कुछ शासकों ने सिक्कों पर अपने चिह्न भी अंकित करवाए जैसे-गजसिंह का ध्वज, सूरतसिंह का त्रिशूल, रतनसिंह का नक्षत्र, सरदारसिंह का छत्र, डूंगरसिंह का चँवर आदि।
- महाराजा डूंगरसिंह के सोने के सिक्कों पर जर्बश्री बीकानेर एवं पताका, त्रिशुल, छत्र, चँवर और किरणीया अंकित थे।
- महाराजा गंगासिंह के समय अंग्रेजी सरकार के साथ हुए समझौते के तहत अंग्रेजों द्वारा प्रचलित सिक्कों को कुछ परिवर्तन के साथ बीकानेर टकसाल में ढालना आरम्भ हुआ जिन्हें **गंगाशाही सिक्के** कहते हैं।
- इन सिक्कों पर एक ओर महारानी विक्टोरिया का चेहरा व VICTORIA EMPRESS तथा दूसरी ओर देवनागरी व उर्दू लिपि में महाराजा गंगासिंह बहादुर अंकित थे।

प्रश्न- राजपूताना की किस रियासत के सिक्कों पर एक ओर सम्राज्ञी विक्टोरिया का चेहरा और अंग्रेजी में "विक्टोरिया एम्प्रेस" लिखा होता था और दूसरी ओर नागरी तथा उर्दू लिपि में महाराजा का नाम लिखा होता था ?(RAS Pre-2013)

(1) जोधपुर (2) जयपुर
(3) बीकानेर (4) उदयपुर
Ans. 3

जयपुर राज्य के सिक्के :-

- जयपुर शासकों के मुगलों से अच्छे सम्बन्ध होने के कारण इन्हें अपने राज्य में सिक्के ढालने की अनुमति अन्य राजस्थानी राज्यों की तुलना में पहले मिली थी।
- जयपुर राज्य की टकसालें आमेर, जयपुर, रूपवास, माधोपुर, सूरजगढ़ तथा चरन (खेतड़ी) में स्थापित थी।
- जयपुर राज्य के सिक्कों पर 6 टहनियों वाले झाड़ का चित्रण होने के कारण इन्हें 'झाड़शाही सिक्के' कहा जाता था।
- महाराजा माधोसिंह और रामसिंह ने स्वर्ण सिक्के चलाए।

11. **प्रबंध चिंतामणि**:- भोज परमार के राज कवि **मेरुतुंग** द्वारा रचित इस ग्रंथ में 13वीं सदी के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन का वर्णन मिलता है।

12. **राजवल्लभ** :- महाराणा कुंभा के वास्तुशिल्पी **मण्डन** द्वारा रचित इस ग्रंथ से नगर, ग्राम, दुर्ग, राजप्रासाद, मंदिर, बाजार आदि के निर्माण पद्धति पर प्रकाश डालता है। यह ग्रंथ कुल 14 अध्यायों में विभाजित है जो 15वीं सदी के सैनिक संगठन एवं मेवाड़ राज्य एवं स्थापत्य कला के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

इनके अलावा किशोरदास द्वारा रचित राजप्रकाश, नन्दराम द्वारा रचित जगतविलास, कृष्ण भट्ट का ईश्वर विलास महाकाव्य, रघुनाथ का जगतसिंह काव्य, यमुनादत्त शास्त्री का वीरवंश रंग, देव भट्ट का जयसिंह कल्पद्रुम आदि विभिन्न समय के शासकों के बारे में तथा तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक गतिविधियों एवं राज्यों की परिस्थितियों का वर्णन करते हैं।

2. राजस्थानी साहित्य :-

राजस्थानी साहित्यों में इतिहास से संबंधित कृतियाँ गद्य एवं पद्य दोनों में लिखी गई। ऐतिहासिक गद्य कृतियों में ख्यात, बात, विगत, वंशावली, हाल, हकीकत, बही आदि प्रमुख हैं। राजस्थानी पद्य कृतियों में रासो, विलास, रूपक, प्रकाश, वचनिका, वेलि, झमाल, झूलणा, दुहा, छंद आदि शामिल हैं।

(क) **ख्यात साहित्य** :- राजस्थानी परम्परा में ख्यात विस्तृत इतिहास होता है। यह वंशावली एवं प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रूप होता है। अधिकांश ख्यात साहित्य गद्य में लिखा गया।

- साहित्य में सबसे पुरानी ख्यात नैणसी की ख्यात है। यह ख्यात महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के **दरबारी कवि मुहणोत नैणसी** द्वारा मारवाड़ी एवं डिंगल भाषा में लिखी गई। इस ख्यात में राजपूतों की **36 शाखाओं** का वर्णन किया गया है। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर) ने ख्यात की सभी प्रतियों को संग्रहित करके 5 जिल्दों में ख्यात और दो जिल्दों में 'गांवा री ख्यात' को प्रकाशित करवाया।
- मुंडीयार की ख्यात मारवाड़ के शासकों के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

प्रश्न- "मुण्डीयार री ख्यात' का विषय है? (RAS Pre – 2013)

(1) सिरोही के चौहान (2) बूंदी के हाडा
(3) मेवाड के सिसोदिया (4) मारवाड के राठौड़
Ans. (4)

- दयालदास की ख्यात बीकानेर के महाराजा रतनसिंह के दरबारी कवि दयालदास सिंढायच द्वारा लिखी गई जो बीकानेर के शासकों के बारे में जानकारी प्रदान करती है। इस ख्यात में बीकानेर के महाराजा **रतनसिंह** द्वारा अपने सामंतों को **कन्या वध** रोकने के लिए गया में प्रतिज्ञा करवाने का वर्णन मिलता है।
- भाटियों की ख्यात में जैसलमेर के भाटी शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- अकबर के दूत मानसिंह एवं राणा प्रताप के मध्य उदय सागर की पाल पर भेंट का वर्णन 'नैणसी री ख्यात' एवं 'आमेर की ख्यात' में मिलता है।
- बाँकीदास की ख्यात को 'जोधपुर राज्य की ख्यात' भी कहा जाता है। बाँकीदास ने इस ख्यात की रचना जोधपुर महाराजा मानसिंह के समय की।

(ख) रासो साहित्य :- मध्य काल में विभिन्न राजस्थानी विद्वानों ने राजाओं एवं राजघराने की प्रशंसा में विभिन्न काव्यों की रचना की जिसे 'रासो' के नाम से जाना गया। रासो ग्रंथ में चन्द्रबरदाई का पृथ्वीराज रासो, नरपति नाल्ह का बीसलदेव रासो, कविजान का कयाम खाँ रासो, दौलत विजय का खुमाण रासो, गिरधर आसिया का संगत रासो, जाचीक जीवन का प्रताप रासो, कवि नरोत्तम का मानचरित्र रासो, दयाराम का राणो रासो, कुंभकरण का रतन रासो एवं कवि डूंगरसी का शत्रुसाल रासो आदि प्रमुख हैं।

- पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ में 5 राजपूत वंशों (गुर्जर-प्रतिहार, परमार, चालुक्य एवं चौहान) की उत्पत्ति गुरु वशिष्ठ के आबू पर्वत के अग्निकुण्ड से बतायी गई है। पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ को चंद्रबरदाई के दत्तक पुत्र **'जल्हण'** ने पूरा किया। इस रासो में संयोगिता हरण एवं तराईन युद्ध का विस्तृत वर्णन मिलता है।
- कवि काशी छंगाणी द्वारा रचित 'छत्रपति रासो' बीकानेर के इतिहास की जानकारी देता है। इस रासो में 1644 ई. में कर्णसिंह (बीकानेर) एवं

अमरसिंह (नागौर) के मध्य लड़े गये युद्ध 'मतीरे की राड़' का वर्णन मिलता है।

- 'बीसलदेव रासो' में अजमेर के बीसलदेव चौहान एवं परमार राजा भोज की पुत्री राजमति की प्रेम कथा का वर्णन मिलता है।
- 'शत्रुसाल रासो' नामक ग्रंथ बूँदी के इतिहास की जानकारी के लिए उपयोगी है।
- जाचीक जीवन द्वारा रचित 'प्रताप रासो' में अलवर राज्य के संस्थापक राव राजा प्रतापसिंह के जीवन का विवरण मिलता है।
- दयालदास द्वारा रचित राणो रासो ग्रंथ में मुग़ल मेवाड़ संघर्ष की घटनाओं की जानकारी मिलती है।
- जोधराज द्वारा रचित हम्मीर रासो में रणथम्भौर के हम्मीर देव चौहान एवं अलाउद्दीन खिलजी के मध्य युद्ध का वर्णन मिलता है।

(ग) वेलि साहित्य :- ऐतिहासिक वेलि साहित्य में राजाओं एवं सामंतों का वीर रसपूर्ण वर्णन मिलता है।

- वेलि किसन रुक्मणी री नामक ग्रंथ पृथ्वीराज राठौड़ (पीथल) द्वारा लिखा गया। अकबर के नवरत्नों में से एक बीकानेर के पृथ्वीराज राठौड़ ने इस ग्रंथ की रचना गागरोन दुर्ग में की। इस ग्रंथ में श्रीकृष्ण एवं रुक्मिणी के विवाह का वर्णन मिलता है। **'दुरसा आढ़ा'** ने इस ग्रंथ को **'पाँचवा वेद'** एवं '19वाँ पुराण' की उपमा दी है। एल. पी. टेस्सीटोरी ने पृथ्वीराज राठौड़ को 'डिंगल का हैरोस' कहा है।

(घ) अन्य राजस्थानी साहित्य :

शिवदास गाडण द्वारा 15वीं सदी में रचित अचलदास खींची री वचनिका नामक ग्रंथ में गागरोन राजा अचलदास एवं मालवा सुल्तान होशंगशाह के मध्य हुए युद्ध का वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ वीर रसात्मक चंपू (गद्य-पद्य) काव्य है।

- जालौर शासक अखैराज के दरबारी कवि पद्मनाभ द्वारा रचित कान्हड़दे प्रबंध नामक ग्रंथ में जालौर शासक कान्हड़दे एवं अलाउद्दीन खिलजी के मध्य हुए युद्ध का वर्णन मिलता है।
- 13वीं सदी में बीठु सूजा द्वारा डिंगल भाषा में रचित राव जैतसी रो छंद नामक ग्रंथ में मुग़ल शासक कामरान एवं बीकानेर शासक राव जैतसी के मध्य हुए युद्ध का वर्णन एवं जैतसी की विजय का वर्णन मिलता है।
- हेमकवि द्वारा रचित गुणभाष नामक ग्रंथ एवं केशवदास द्वारा रचित गुणरूपक नामक ग्रंथ से जोधपुर शासक गजसिंह प्रथम के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- बूँदी के महाराव रामसिंह के दरबारी कवि सूर्यमल्ल मिश्रण के द्वारा पिंगल भाषा में रचित वंशभास्कर ग्रंथ में बूँदी राज्य का विस्तृत इतिहास मिलता है।
- बीकानेर महाराजा दलपतसिंह द्वारा रचित दलपत विलास नामक ग्रंथ से अकबर द्वारा हेमू का वध न किये जाने की जानकारी मिलती है। **सार्दुल राजस्थान रिसर्च इंस्टीट्यूट (बीकानेर)** द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक अधूरी है।

- **मलिक मोहम्मद जायसी** द्वारा **1540 ई.** में रचित पद्मावत ग्रंथ में अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़ अभियान एवं रानी पद्मिनी के सौंदर्य का वर्णन मिलता है।
- **कवि करणीदान** ने **सूरजप्रकाश** नामक ग्रंथ की रचना जोधपुर शासक अभयसिंह राठौड़ के समय की। इस ग्रंथ में अभयसिंह के समय के युद्धों का सजीव वर्णन मिलता है।
- कविराजा **श्यामलदास** द्वारा रचित **वीर विनोद** ग्रंथ में मेवाड़ के गुहिलों के इतिहास का वर्णन है।
- अन्य राजस्थानी साहित्यों में बख्तराम शाह का बुद्धि विलास, कविमान का राज विलास, चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ, सुर्जन चरित्र, श्रीधर व्यास का रणमल छंद, सायांजी झूला का रुक्मणी हरण, नागदामण, जयसिंह सूरी का हम्मीर मदमर्दन, मंछाराम सेवग का रघुनाथ रूपक दरसा आढा का विरुद छतहरी, किरतार बावनी, नरहरिदास का रसिक रत्नावली, बादर ढाढी का वीरमायण नामक ग्रंथ आदि अपने-अपने समय के शासकों, रीति-रिवाजों, रहन-सहन एवं तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को उद्घाटित करने के प्रमुख स्रोत हैं।

3.जैन साहित्य :- राजस्थान में विभिन्न जैन भण्डारों में जो साहित्य संग्रहित है वह इस प्रदेश की ऐतिहासक जानकारी का महत्वपूर्ण स्रोत है। राजस्थान में जैसलमेर, बीकानेर, सोजत, चित्तौड़, सादड़ी आदि स्थानों पर जैन भण्डार है। इस साहित्य

धौलपुर – तमंचाशाही

अलवर –अखैंशाही, रावशाही

सलूम्बर- पदमशाही

करौली- माणकशाही

कोटा – मदनशाही,गुमानशाही

तामपत्र

आहड़ (1206) – गुजरात

खेराद (1437)- राणा कुंभा द्वारा दान

चिकली (1483)- किसानों से ली जाने वाली लगान

पुर (1535) – कर्मावती द्वारा जौहर पूर्व दान

मुण्डीयार री ख्यात का विषय मारवाड़ के चौहान हैं

अभ्यास प्रश्न

1. दिए गये शिलालेखों/प्रशस्तियों को उनके समय के अनुसार (पहले से बाद में) क्रमबद्ध करें।
   a. मंडोर का बाउक का शिलालेख
   b. सांडेराव के महावीर जैन मंदिर का अभिलेख
   c. चितौड़ का शिलालेख
   d. आहड़ के आदिवराह मंदिर से प्राप्त शिलालेख
   a. a, c, b,d
   b. d, a, b,c
   c. a, d, b,c
   d. d,a,c, b

   उत्तर :- c

2. पदमशाही मुद्रा कहाँ प्रचलित थी ?

   (a) शाहपुरा (b) किशनगढ़

   (c) सलूम्बर (d) ब्यावर

   उत्तर :- c

3. राज्य में प्राप्त एक मध्यकालीन प्रशस्ति के संबंध में निम्न कथनों पर गौर कीजिए

   I. यह 17वीं शताब्दी में महाराजा राजसिंह द्वारा स्थापित कराई गई।

   II. इसमें राजसमंद झील का निर्माण अकाल राहत कार्यों के तहत किए जाने का उल्लेख है।

   III. यह भारत का सबसे बड़ा शिलालेख है। उक्त प्रशस्ति कौनसी है?

   (a) राज प्रशस्ति
   (b) सामोली का शिलालेख
   (c) नाथ प्रशस्ति
   (d) चीखा का लेख

   उत्तर :- a

4. डोडिया तथा अर्वेशाही सिक्का का प्रचलन कहाँ पर था ?

   (a) बीकानेर (b) जोधपुर

   (c) पाली (d) जैसलमेर

   उत्तर :- d

5. निम्न में से कौनसा शिलालेख राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख कहलाता है?

   (a) नगरी का शिलालेख
   (b) सामोली का शिलालेख
   (c) किराडू का शिलालेख
   (b) बरली का शिलालेख

   उत्तर :- d

6. सांडेराव का लेख कंहा से यह शिलालेख प्राप्त हुआ।

   (a) भीलवाड़ा (b) पाली
   (c) चित्तौड़गढ़ (d) जोधपुर

   उत्तर :- b

7. राजस्थान के कौन से ताम्रपत्र से रानी कर्मवती द्वारा जौहर के प्रमाण मिलते हैं -

   (a) आहड ताम्रपत्र (b) खेरोदा ताम्रपत्र
   (c) पुर ताम्रपत्र (d) चीकली ताम्रपत्र

   उत्तर :- c

8. आहड़ के ताम्रपत्र (1206) से हमें जानकारी मिलती है -

(a) महाराणा कुम्भा ने कीर्तिस्तम्भ का निर्माण करवाया था ।
(b) महाराणा राजसिंह ने राजसमंद झील का निर्माण करवाया था ।
(c) गुजरात के शासक भीमदेव के समय में मेवाड़ पर गुजरात का अधिकार था ।
(d) किसानों से वसूल की जाने वाली विविध लाग - बागों का पता चलता है ।

उत्तर :- c

9. मुण्डीयार की ख्यात मे किसका वर्णन है?
(a) आमेर के कछवाह शासको का वर्णन है
(b) मारवाड के राठौड शसको का वर्णन है
(c) कोटा के हाडा शासको का वर्णन है
(d) मेवाड के सिसोदिया शासको का वर्णन है

उत्तर :- b

10. किस शिलालेख मे चौहानो को वत्स गौत्र का ब्राह्मण कहा गया है ?
(a) आमेर का शिलालेख
(b) श्रृंगी ऋषि का शिलालेख
(c) बिजौलिया का शिलालेख
(d) चीरवे का शिलालेख

उत्तर :- c

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

1. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने

कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था ।

- **सरस्वती दृषद्वती नदियों** द्वारा लाई जाने वाली मिट्टी कृषि जन्य उत्पादों के लिए बहुत उपजाऊ थी। इसमें वे जौ और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।
- कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।
- ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था ।
- स्थानीय उद्योग पर्याप्त विकसित थे। कुंभकार का **मृदभाण्ड उद्योग** अत्यन्त विकसित था।
- वह विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड चाक पर बनाता था, जिन्हें भट्टों में अच्छी तरह पकाया जाता था। मृद्भाण्डों में मुख्यरूप से मर्तबान, कलश, बीकर, टस्तरियाँ, प्याले, टोंटीदार बर्तन, डिंद्रित भाण्ड एवं थालियाँ शामिल हैं। हस्त निर्मित कुछ बड़े मृदभाण्ड भी प्राप्त हुए हैं जो संभवतः अन्न आदि संग्रह हेतु काम में लिए जाते थे।
- इन मृदभाण्डों पर **काले एवं सफेद** वर्णकों से चित्रण भी किया जाता था, जिसमें आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लूप, बिन्दुओं का समूह, वर्ग, वर्ग जालक, त्रिभुज, तरंगाकार रेखाएँ अर्द्धवृत्त, एक-दूसरे को काटते वृत्त, शल्कों का समूह आदि के प्रारूपण प्रमुख हैं।
- इसके अतिरिक्त पीपल की पत्तियों तथा चौपत्तिया फूल आदि वानस्पतिक पादपों का अंकन भी प्राप्त हुआ है।
- बड़े बर्तनों पर **'कुरेदकर'** भी **अलंकरण** किया गया है। किन्हीं-किन्हीं मृदपात्रों पर 'ठप्पे ' भी लगे हुए मिले हैं और किसी-किसी पर तत्कालीन लिपि में लिखे लेख भी प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ (मोहरें), मूर्तियाँ, चूड़ियाँ, मनके, औजार आदि से ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता कालीन कालीबंगा समाज में शिल्पकला का उचित स्थान रहा है ।
- सोना, चाँदी अर्द्ध बहुमूल्य पत्थर, शंख से आभूषणों का निर्माण किया जाता था। स्त्रियाँ कानों में कर्णाभरण, कर्णफूल, बालियाँ आदि पहनती थी एवं बालों में पिनों का प्रयोग करती थी गले में मनकों के हार धारण करती थी।
- हाथों में शंख, मिट्टी, ताम्र एवं **सेलखड़ी** से निर्मित्त चूड़ियाँ धारण करती थी। अंगुलियों में अंगूठी पहनती थी (एक शव के साथ ताम्र-दर्पण एवं कान के पास कुण्डल भी मिला है।
- स्पष्टतया कालीबंगा निवासी **प्रसाधन प्रेमी** थे।
- कालीबंगा उत्खनन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह भी है कि इसने सैन्धव लिपि की पहचान करने के प्रयास में एक ठोस दिशा-निर्देश प्रस्तुत किया है।
- यहाँ से प्राप्त एक सैन्धव लिपि युक्त मृदुपात्र पर लिपि की **ओवर लैपिंग** (एक-दूसरे पर आये अक्षर) ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह लिपि दाहिने से बायें की ओर लिखी जाती थी।
- राज्य सरकार द्वारा कालीबंगा में प्राप्त पुरावशेषों के संरक्षण हेतु वहाँ एक संग्रहालय की स्थापना कर दी गई है।
- पाकिस्तान में 'कोटदीजी' स्थान पर प्राप्त पुरातात्विक अवशेष कालीबंगा के अवशेषों से काफी मिलते - जुलते हैं। **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है ।)**
- सिन्धु-सरस्वती सभ्यता का विनाशः संभवत् भूकम्प या भूगर्भीय व जलवायु के परिवर्तन के कारण इस समृद्ध नगरीय सभ्यता के केन्द्र का नाश हो गया था। जो समुद्री हवाएँ पहले इस ओर नमी-युक्त बहती थीं, वे हवाएँ कच्छ के रण से गुजर कर सूखी चलने लगी ।
- संभवतया इसीलिए यह क्षेत्र धीरे-धीरे रेत का समुन्द्र बन गया।
- इस क्षेत्र में बहने वाली सरस्वती नदी का जो वर्णन हमें पुराणों में मिलता है, वह धीरे-धीरे रेत के समुन्द्र में लुप्त हो गई। भूकम्प के प्राचीनतम साक्ष्य यहीं मिलते हैं।

3. आहड़ सभ्यता

- इस सभ्यता का विकास राजस्थान **के उदयपुर जिले में स्थित आहड़ नामक** स्थान पर हुआ

अर्थात् इस सभ्यता का सर्वप्रथम प्रमाण आहड़ नामक स्थान पर हुए उत्खनन से प्राप्त हुए थे।

- यह सभ्यता **आयड़ नदी** के किनारे विकसित हुई । आयड़ नदी उदयपुर की उदयसागर झील से बेड़च नाम से जानी जाती है। चित्तौड़गढ़ नगर बेड़च नदी के किनारे बसा है जबकि चित्तौड़गढ़ दुर्ग बेड़च नदी और गंभीरी नदी के संगम पर बना हुआ है। बेड़च नदी बनास नदी की सहायक नदी है इसलिए कहा जाता है कि आहड़ सभ्यता बनास नदी के किनारे विकसित हुई। तथा इसे बनास सभ्यता भी कहते हैं।
- इस सभ्यता से मिले हुए प्रमाणों के आधार पर इसे दो कालों में बांटा गया है -

I.ताम्रकालीन सभ्यता
2. लोहयुगीन सभ्यता
यहाँ पर ताँबे के और लोहे के अवशेष मिले हैं।

आहड़ सभ्यता के प्राचीन नाम –

- I. **ताम्रवती नगरी** – आहड़ सभ्यता के लोगों का प्रमुख उद्योग ताँबे से संबंधित था इसलिए इसे **ताम्रवती नगरी** के नाम से भी जानते हैं।
- 2. **आघाटपुर** - क्योंकि यहाँ पर एक दुर्ग मिला है जिसे **अघाट दुर्ग** के नाम से जानते हैं।

उपनाम –

- **पुणे विश्व विद्यालय** के पूर्व प्रो**फेसर धीरज लाल सांकलिया** ने इसे आहड़ सभ्यता का नाम दिया। इसे बनास संस्कृति के नाम से भी जानते हैं। इस सभ्यता का उत्खनन धीरज लाल संकलिया के द्वारा भी किया गया था।
- **धीरज लाल सांकलिया** को खुदाई के दौरान यहाँ से एक 40 फीट का गहरा गड्ढा मिला था जो इस बात का प्रमाण है कि इस सभ्यता का 8 बार विकास हुआ और यह 8 बार पनपी थी। इसलिए इस सभ्यता को मृतकों के टीले की सभ्यता के नाम से भी जानते हैं।

नोट –यहाँ से मिले प्रमाणों के आधार पर कहा जाता है कि आहड़ एक ग्रामीण सभ्यता थी अर्थात् यहाँ नगरीय सभ्यता के प्रमाण नहीं मिले हैं जबकि कालीबंगा सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी।

आहड़ सभ्यता का उत्खनन कार्य –

- इस सभ्यता का उत्खनन कार्य निम्न चार लोगों ने किया -
  1.पंडित अक्षयकीर्ति व्यास
  2.रतनचंद्र अग्रवाल आर.सी. अग्रवाल
  3.बी.एन. मिश्रा एवं एच.डी.संकलिया
  4.विजय कुमार एवं PC चक्रवर्ती

- इस सभ्यता के उत्खनन का कार्य सर्वप्रथम **1953 में पंडित अक्षय कीर्ति व्यास** के द्वारा किया गया।

  रतनचंद्र अग्रवाल ने इस सभ्यता का व्यापक उत्खनन **सर्वप्रथम 1954** में कराया था । यहाँ पर मिले एक बड़े टीले का उन्होंने अध्ययन किया जिसे **धूलकोट का टीला** कहा जाता है।

- पुणे विश्वविद्यालय के प्रोफेसर धीरज लाल संकलिया एवं बी.एन. मिश्रा को भारत सरकार ने इस स्थल का उत्खनन कार्य करने के लिए सन् 1961-62 में नियुक्त किया।
- राजस्थान सरकार की ओर से इस सभ्यता का उत्खनन कार्य करने के लिए **विजय कुमार** एवं **पी.सी. चक्रवर्ती** को नियुक्त किया गया था ।

इस सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं –

- इस सभ्यता का उत्खनन कार्य तीन स्तरों में किया गया।
- पहले स्तर के उत्खनन कार्य में **स्फटिक पत्थर** की अधिकता सबसे ज्यादा मिली है। इन पत्थरों का उपयोग यहाँ के लोग औजार व उपकरण बनाने के काम में लेते थे।
- दूसरे स्तर की खुदाई पूर्व दिशा में हुई थी जिसमें लोहे एवं ताँबे के उपकरणों की अधिकता मिली है।
- तीसरे स्तर की खुदाई जो कि पश्चिम दिशा में हुई थी, इस स्तर की खुदाई में मृद्भाण्ड के प्रमाण अधिक मिले हैं।
- यहाँ के **मकान कच्ची ईंटों से निर्मित** थे और अधिकांश मकान आयताकार थे।
- यहाँ पर सामूहिक भोजन व्यवस्था के प्रमाण मिले हैं अर्थात् यहाँ के लोग एक साथ मिलकर एक ही मकान में एक साथ भोजन बनाते थे यहाँ पर एक ही मकान में कई रसोइयाँ एवं चूल्हे मिले हैं **एक**

घर में 6 चूल्हे मिले **हैं,** तथा यहाँ पर एक चूल्हे पर मानव की हथेलियों का निशान मिले हैं।

- यहाँ पर बिना हत्थे का जलपात्र मिला है (गिलास की तरह) इसी प्रकार का जलपात्र ईरान और बलूचिस्तान से भी मिला है जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोगों का संबंध **ईरान व बलूचिस्तान** से भी था।
- यहाँ पर अनाज का संग्रह करने के लिए गौरे कोठे का उपयोग किया जाता था, इसे बंकोर भी कहा जाता था। यह मिट्टी के बने होते थे इसलिए इन्हें **मृदभाण्ड** भी कहते हैं।
- यहाँ पर छह प्रकार की यूनानी मुद्राएँ तथा तीन मोहरे मिली है जो ताँबे से बनी थी। इनमें से एक यूनानी मुद्रा में **एक तरफ त्रिशूल** का चित्र बना है तथा दूसरी तरफ **यूनानी देवता अपोलो** का चित्र बना है। और किनारों पर **यूनानी भाषा** का उल्लेख है, इस मुद्रा का प्रमाण धूलकोट के टीले से मिलता है।
- इस सभ्यता के लोगों का प्रमुख उद्योग ताँबे से संबंधित था। ताँबे का उपयोग उपकरण बनाने, अस्त्र शस्त्र बनाने कुल्हाड़ी बनाने में किया करते थे।
- **तांबा को गलाने की भट्टी** इसी सभ्यता से मिली है।

नोट –प्रिय छात्रों ताँबे से निर्मित अस्त्र-शस्त्र, उपकरण, ताँबे की कुल्हाड़ी **"गणेश्वर सभ्यता"** से भी मिली है, लेकिन **ताँबे को गलाने** की भट्टी का प्रमाण **एकमात्र केवल आहड़ सभ्यता** से मिले हैं।

- यहाँ पर एक बैल की आकृति की मूर्ति मिली है, जो कि **टेराकोटा पद्धति** से निर्मित है। इस मूर्ति को **बनासियल बुल** की संज्ञा दी जाती है।
- यहाँ के लोग अंतिम संस्कार शव को गाड़कर किया करते थे, और शव को गाड़ते समय उस व्यक्ति के आभूषण और कपड़ों को साथ में दफनाते थे। शव का सिर उत्तर दिशा में तथा पैर को दक्षिण दिशा में रखते थे। इस प्रकार का प्रमाण **केवल इसी सभ्यता** से मिलता है।
- इस आहड़ सभ्यता के लोग कृषि से परिचित थे इस बात का प्रमाण डॉक्टर गोपीनाथ शर्मा ने दिया। यहाँ पर दो फसलों का प्रमाण मिला है, 1. ज्वार 2. चावल
- यहाँ के लोग सिलाई से परिचित थे तथा कपड़ों पर रंग डालने का भी प्रयोग करते थे, अर्थात् यहाँ **रंगाई छपाई का** कार्य प्रचलन में था।
- यहाँ पर एक **चक्रकूप** पद्धति का प्रचलन था, जब घरों में पानी भर जाता था तब यहाँ के लोग एक गहरा गड्ढा खोदते थे, और उसमें मिट्टी के घड़े को एक के ऊपर एक रखते थे जिसके कारण उसका पानी इन घड़ों के द्वारा सोख लिया जाता था। इस पद्धति को **चक्रकूप पद्धति** कहते थे।

प्रश्न-आहड़ सभ्यता के बारे में निम्न कथनों पर विचार कीजिए – [RAS. 2021]

(A) आहड़वासी तांबा गलाना जानते थे।

(B) ये लोग चावल से परिचित नहीं थे।

(C) धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक साधन था।

(D) यहाँ से काले - लाल रंग मृद्भाण्ड मिले हैं, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई हैं।

सही विकल्प का चयन कीजिए –

(1) A, B एवं C सही हैं

(2) A, C एवं D सही हैं

(3) A एवं B सही हैं

(4) C एवं D सही हैं

Ans. 2

4. बैराठ (जयपुर) :

- बैराठ जयपुर जिले में शाहपुरा उपखण्ड में बाण गंगा नदी के किनारे स्थित लौह युगीन स्थल है।
- बैराठ का प्राचीन नाम **"विराट नगर"** ' था। महाजनपद काल में यह **मत्स्य जनपद** की **राजधानी** था।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष **1936-37** में **दयाराम साहनी** द्वारा तथा **1962-63** में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाश नाथ दीक्षित द्वारा किया गया।
- वर्ष 1837 में कैप्टन बर्ट ने यहाँ से मौर्य सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख की खोज की। वर्तमान में यह शिलालेख **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।

30. सोंथी :

- यह बीकानेर में स्थित है ।
- खोज :- अमलानंद घोष द्वारा (1953 में) की गई।
- यह कालीबंगा प्रथम के नाम से प्रसिद्ध है।
- यहाँ पर हड़प्पा कालीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं।

31. बांका :

- यह भीलवाड़ा जिले में स्थित है ।
- यहाँ से राजस्थान की प्रथम अलंकृत गुफा मिली है ।

32. गुराड़ा :

- सीकर जिले में स्थित है ।
- यहाँ से हमें **चाँदी के 2744 पंचमार्क सिक्के** मिले हैं ।

33. बयाना :

- यह भरतपुर में स्थित है ।
- इसका प्राचीन नाम श्रीपंथ है ।
- यहाँ से गुप्तकालीन सिक्के एवं नील की खेती के साक्ष्य मिले हैं ।

क्र.स.	संस्कृति काल	स्थल
1.	पुरा पाषाण काल	डीडवाना एवं जायल (नागौर), भानगढ़ (अलवर), विराटनगर (जयपुर), दर (भरतपुर), **इन्द्रगढ़ (कोटा)**
2.	मध्य पाषाण काल	**बागौर (भीलवाड़ा),** विराटनगर (जयपुर), तिलवाड़ा (बाड़मेर)
3.	नव पाषाण काल	आहड़ (उदयपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), **गिलूण्ड** (राजसमंद), झर (जयपुर)
4.	ताम्र पाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बाड़मेर), **बालाथल (उदयपुर)**
5.	ताम्रयुगीन	**गणेश्वर (सीकर),** साबणियां, पूंगल (बीकानेर), बूढ़ापुष्कर (अजमेर), **बेणेश्वर (डूंगरपुर),** नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथबाड़ी (जयपुर), कुराड़ा (परबतसर), पलाना (जालौर), मलाह (भरतपुर), कोलमाहौली (सवाईमाधोपुर)
6.	लौह युगीन	**नोह (भरतपुर), सुनारी (झुंझुनू),** विराटनगर, जोधपुरा, सांभर (जयपुर), रैढ़, नगर, नैणवा, भीनमाल (जालौर), नगरी (चित्तौड़गढ़), चक-84, तरखानवाला (गंगानगर), ईसवाल (उदयपुर)

सारांश

- बागौर – भीलवाड़ा
- कालीबंगा – हनुमानगढ़
- खोजकर्ता - अमलानंद घोस
- आहड़ – (उदयपुर)- अक्षयकीर्ति व्यास
- बैराठ – (जयपुर)- दयाराम साहनी 1936-37 में
- गणेश्वर (सीकर)- रत्नचंद्र अग्रवाल द्वारा उत्खनन , ताम्रयुगीन सभ्यता
- गिलुण्ड (राजसमंद)- बी .बी .लाल
- रंगमहल (हनुमानगढ़) – डॉ. ध्लारिड द्वारा उत्खनन
- ओझियाना (भीलवाड़ा)- B.R. मीणा द्वारा उत्खनन
- नगरी (चितौड़) – डॉ. डी . आर . भण्डारकर
- सुनारी (झुंझनु)- लोहा गलाने की प्राचीन भट्टिया
- जोधपुर (जयपुर)- R. C. अग्रवाल द्वारा उत्खनन
- तिलवाड़ा (बाड़मेर)- V.N. मिश्र
- रैढ (Tonk)- दयाराम साहनी
- नगर (Tonk) – कृष्ण देव
- भिनमाल (जालौर)- रतनचंद्र अग्रवाल

- नोह (भरतपुर)- रतनचंद्र अग्रवाल

लेखक	**ग्रंथ**
• करणीदान	सूरज प्रकाश
• दोलतविजय	खुमानरासो
• **पद्मनाभ**	**कान्हड़दे प्रबंध**
• जगजीवन भट्ट	अजितोदय
• ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान	रीमा हूजा
• पृथ्वीराज विजय	जयानक
• वंशभास्कर	सूर्यमल मिश्रण

अभ्यास प्रश्न

1. "ए सर्वे वर्क ऑफ एनशिएन्ट साइट्स अलोंग दी लोस्ट सरस्वती रिवर" किसका कार्य था?

(a) एम. आर. मुगल (b) ओरैल स्टैन
(c) हरमन गोइट्ज (d) वी. एन. मिश्रा
उत्तर :- b

2. प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे बसी राजस्थान की सबसे प्राचीन सभ्यता कौनसी है?

(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) गणेश्वर
उत्तर :- a

3. निम्नांकित में से किस इतिहासवेत्ता ने कालीबंगा को सिंधु घांटी साम्राज्य की तृतीय राजधानी कहा है?

(a) जी. एच. ओझा (b) श्यामल दास
(c) दशरथ शर्मा (d) दयाराम साहनी
उत्तर :- c

4. राजस्थान की किस सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी कहते हैं?

(a) नागौर (b) गिलूण्ड
(c) आहड़ (d) गणेश्वर

उत्तर :- d

5. प्राचीन भारत के टाटानगर के नाम से विख्यात सभ्यता है?

(a) तिलवाड़ा (b) नलियासर
(c) जोधपुरा (d) रैढ़
उत्तर :- d

6. मालव सिक्के व आहत मुद्राएँ किस सभ्यता के अवशेष हैं?

(a) जोधपुरा (b) रैढ़
(c) नगर (मालव नगर) (d) नलियासर
उत्तर :- c

7. कान्तली नदी के किनारे स्थित गणेश्वर की सभ्यता का उत्खनन किसके नेतृत्व में हुआ?
(a) आर.सी. अग्रवाल व एच.एम. साँकलिया
(b) आर.सी. अग्रवाल व अमलानंद घोष
(c) आर.सी. अग्रवाल व विजयकुमार
(d) आर.सी. अग्रवाल व अक्षय कीर्ति व्यास
उत्तर :- B

8. इनमें से कौनसा स्थल लौहयुगीन सभ्यता से सम्बन्धित नहीं हैं?

(a) डेरा (b) जोधपुरा
(c) विराटनगर (d) आहड़

उत्तर :- D

9. निम्न में से कौन कालीबंगा सभ्यता से सम्बन्धित नहीं है-

(a) अमलानंद घोष (b) बी.बी. लाल

(c) बी.के. थापर (d) आर.सी. अग्रवाल

उत्तर :- D

10. एक घर में एक साथ छः चूल्हे किस पुरातात्विक स्थल में प्राप्त हुए हैं?

(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) बागोर
उत्तर :- b

अध्याय – 5

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से ।।वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- जोधपुर के **बाँक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था।
- 8वीं-।0वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालौर)"** थी। बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है।
- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी। अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्न'** भी कहा है।
- **अल मसूदी प्रतिहारों** को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को **'बोरा'** कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्जी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है। डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं। जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को **ईरानी मूल** के बताते हैं।
- **मिस्टर जैक्सन** ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था। **कनिघंम** ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। **मुहणौत नैणसी** (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी।

भीनमाल शाखा (जालौर) गुर्जर प्रतिहार वंश

- **गुर्जर प्रतिहार वंश** – प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।
- उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।
- इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।
- गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।
- नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।

- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।
- अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्न' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।
- राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्वशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।
- मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लो'(गुर्जर)तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलो' (भीनमाल) बताया है।
- कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।
- कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।
- उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।
- डॉ. भंडारकर ने प्रतिहारा को विदेशी गुर्जर जाति की संतान माना है।

मण्डोर के प्रतिहार

- मण्डोर के प्रतिहार गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।
- मण्डोर के प्रतिहार स्वयं को 'हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण' (रोहिलद्धि)का वंशज बताते हैं।
- हरिश्चन्द्र के दो पत्नियां थी- एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। उसकी ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न संतान प्रतिहार ब्राह्मण तथा क्षत्राणी भद्रा से उत्पन्न संतान क्षत्रिय प्रतिहार कहलाये।
- हरिश्चन्द्र की रानी भद्रा से चार पुत्र- भोगभट्ट, कदक, रज्जिल और दद्द उत्पन्न हुए।
- इन चारों ने मिलकर मण्डोर को जीता तथा यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की।
- मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रारंभ होती है।

रज्जिल

- हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों में से रज्जिल मण्डोर का शासक बना।

नागभट्ट प्रथम

- यह रज्जिल का पौत्र था।
- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

शीलुक

- शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक भाटी देवराज को हराकर अपने राज्य की सीमा का वल्ल तक विस्तार किया।

कक्क

- यह शीलुक का पौत्र था।
- इसने मुंगेर के युद्ध में पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- इसके दो पुत्र थे- बाउक तथा कक्कुक।

बाउक

- बाउक एक प्रतापी शासक था जिसने अपने शत्रु नन्दवल्लभ को मारकर भूअकूप पर अधिकार कर लिया।
- इसका 837 ई. का 'मण्डोर (जोधपुर) का शिलालेख' प्राप्त हुआ है जिसमें बाउक ने अपने वंश का वर्णन अंकित करवाया।
- बाउक ने मयूर नामक राजा को पराजित किया था।

कक्कुक

- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डोर का शासक बना।
- घटियाला से प्राप्त दो शिलालेख कक्कुक के समय के हैं।
- इसने रोहिंसकूप (घटियाला) के निकट गावों में बाजार बनवाये तथा व्यापार में वृद्धि की।
- कक्कुक के द्वारा घटियाला तथा मण्डोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये गये।
- कालान्तर में मण्डोर के आस-पास के क्षेत्र पर चौहानों का अधिकार हो गया लेकिन मण्डोर प्रतिहारों की इन्दा शाखा के अधीन रहा।
- इन्दा प्रतिहारों ने राठौड़ चूँडा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर मण्डोर का क्षेत्र राठौड़ों को दहेज में दे दिया।

- इस घटना के साथ ही मण्डोर प्रतिहारों का राजनीतिकी इतिहास समाप्त हो गया।

भड़ौंच के गुर्जर प्रतिहार

दद्द प्रथम

- भड़ौंच के गुर्जर राज्य का संस्थापक हरिश्चन्द्र का पुत्र दद्द प्रथम था।
- इस शाखा के 629 ई. से 641 ई. के कुछ दानपत्र मिले हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि नान्दीपुर इन गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी थी।
- दद्द प्रथम ने नागवंशियों तथा वनवासी राजा निरिहुलक के राज्य पर अधिकार किया था।

जयभट्ट प्रथम

- जयभट्ट प्रथम दद्द प्रथम का पुत्र था। इसकी उपाधि 'वीतराग' थी।
- जयभट्ट प्रथम हर्षवर्धन के समकालीन था।
- संखेड़ा दानपत्रों से उसकी विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- उमेता, ललुआ तथा बेगुमरा शिलालेखों के अनुसार जयभट्ट प्रथम ने वल्भी की सेना को काठियावाड़ प्रान्त में पराजित किया था।
- इसने कलचुरियों को भी पराजित किया था।

दद्द द्वितीय

- जयभट्ट प्रथम के बाद उसका पुत्र दद्द द्वितीय शासक बना, जिसकी उपाधि 'महाराजा प्रशांतराग' थी।
- बड़ौदा के संखेड़ा नामक स्थान से दद्द द्वितीय के दानपत्र प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- दद्द द्वितीय के समय हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया।
- इस समय ध्रुवसेन द्वितीय ने दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली, जिसके बाद दद्द द्वितीय ने हर्षवर्धन से उसका राज्य वापस दिला दिया।
- इसका राज्य विस्तार उत्तर में माही से दक्षिण में कीम तक तथा पूर्व में मालवा व खानदेश से पश्चिम में समुद्र तक था।

जयभट्ट द्वितीय

- दद्द द्वितीय के बाद उसका पुत्र जयभट्ट द्वितीय शासक बना।
- यह चालुक्यों का सामन्त था।

दद्द तृतीय

- यह जयभट्ट द्वितीय का पुत्र था, जिसने पंचमहाशब्द तथा बहुसहाय नामक उपाधियाँ धारण की।
- इसने वल्भी के शासक शीलादित्य द्वितीय को पराजित किया था।

जयभट्ट चतुर्थ

- यह इस वंश का अन्तिम शासक था।
- इसने अरब आक्रमणकारियों को पराजित किया था।
- इस शाखा के गुर्जर प्रतिहारों के लिए सामंत या महासामंत शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि इन शासकों की स्वतंत्र सत्ता नहीं थी।

राजोगढ़ के गुर्जर प्रतिहार

- अलवर के राजोगढ़ से 960 ई. का शिलालेख प्राप्त हुआ है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि यहाँ पर प्रतिहार गोत्र का गुर्जर महाराजाधिराज सावट का पुत्र मथनदेव राज्य करता था।
- राजोगढ़ शिलालेख से बहलोल लोदी के समय तक बड़गूजरों का राजोगढ़ में निवास होना सिद्ध होता है।

भीनमाल के गुर्जर (चावड़ा वंश)

- भीनमाल का गुर्जर राज्य दक्षिण के चालुक्यों तथा हर्षवर्धन के समकालीन था।
- इस चावड़ा गुर्जर राज्य की राजधानी भीनमाल थी।
- 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भीनमाल की यात्रा की थी, इसने राज्य का नाम कु-चे-लो तथा इसकी राजधानी पीलोमोलो (भीनमाल) बताया।
- भीनमाल के संस्कृत विद्वान महाकवि माघ ने 'शिशुपाल वध' नामक ग्रंथ लिखा।
- माघ ने सुप्रभदेव को यहाँ का शासक बताया था।

- महेन्द्रपाल प्रथम को '**रघुकुल तिलक** चूड़ामणि, निर्भयराज व निर्भय नरेन्द्र, महीशपाल तथा महेन्द्रायुध' आदि नामों से भी पुकारा गया ।
- **राजशेखर** ने कर्पूरमंजरी, प्रबंधकोष, बाल रामायण, बाल भारत (प्रचण्ड पाण्डव), विद्धशाल भंजिका नाम से नाटक व काव्यमीमांसा, हरविलास, भुवनकोष नामक काव्य ग्रंथों की रचना की राजशेखर ने अपनी पत्नी अवन्ति सुंदरी के कहने पर ही '**कर्पूरमंजरी**' की रचना की थी ।
- महेन्द्रपाल को **'निर्भय नरेश'** भी कहा गया है ।
- इतिहासकार जी. एन. पाठक ने अपने ग्रंथ ' उत्तर भारत का राजनेतिक इतिहास' में प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल प्रथम को **हिंदु भारत का अतिंम महान हिंदू सम्राट** माना है।

प्रश्न- महान संस्कृत कवि एवं नाटककार राजशेखर निम्न में से किसके दरबार से सम्बन्धित था? (RAS Pre-26.10.2013)
(1) राजा भोज
(2) महिपाल
(3) महेन्द्रपाल प्रथम
(4) इन्द्र तृतीय
Ans. 3

महिपाल प्रथम (914-943 ई.)

- महिपाल ने भी राजशेखर को आश्रय दिया था । राजशेखर ने महिपाल प्रथम को 'आर्यवृत्त का महाराजाधिराज, रघुकुल मुक्तामणि व रघुकुल मुकुटमणि' के नाम से पुकारा ।
- राजशेखर ने महिपाल को बाल भारत नाटक में रघुवंश मुक्तामणि (रघुवंशरूपी मोतियों में मणि के समान) एवं आर्यवृत का महाराजाधिराज लिखा है । महिपाल को विनायकपाल एवं **हेरम्बपाल** के नाम से भी जाना जाता है ।
- महिपाल के समय **915 ई. में अरब यात्री अलमसूदी** भारत आया ।
- अलमसूदी ने गुर्जर-प्रतिहारों को अलगुर्जर व राजा को '**बोरा**' कहा ।
- महिपाल प्रथम के शासनकाल से प्रतिहारों का पतन शुरू हो गया

महेन्द्रपाल-द्वितीय (945-948 ई.)

- इसके बाद गुर्जर-प्रतिहारों में चार शासक हुए देवपाल (948-49 ई.), विनायकपाल द्वितीय (953-54 ई.), महीपाल द्वितीय (955 ई.), विजयपाल द्वितीय (960 ई.) इनके समय गुर्जर-प्रतिहारों की अवनति हुई।

राज्यपाल :-

- प्रतिहार शासक राज्यपाल (राजपाल) के समय महमूद गजनवी ने कन्नौज पर 1018 ई. (12वां अभियान) में आक्रमण किया, जिससे डरकर राज्यपाल कन्नौज छोड़कर गंगा पार भाग गया ।

त्रिलोचनपाल :-

- राज्यपाल के बाद त्रिलोचनपाल प्रतिहारों का शासक बना ।
- जिसे **महमूद गजनवी ने 1019 ई.** में पराजित किया ।

यशपाल :-

- प्रतिहार वंश का **अंतिम शासक यशपाल (1036 ई.)** था ।
- 11वीं शताब्दी में कन्नौज पर गहड़वाल वंश ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार प्रतिहारों के साम्राज्य का 1093 ई. में पतन हो गया ।

प्रश्न- निम्नलिखित में से कौन सा शासक गुर्जर-प्रतिहार राजवंश से संबंधित नहीं है ? (RAS. 2018)
(1) नागभट्ट-II **(2) महेन्द्रपाल-I**
(3) देवपाल **(4) भरत्रभट्ट-I**
Ans. 4

गुहिल वंश (सिसोदिया) के शासक

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

- **विजयभूप** ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहाँ इनका शासन सदियों तक रहा । विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में **शिलादित्य** नामक व्यक्ति **वल्लभीनगर** का

शासक बना । राजस्थान के आबू में उस समय **परमार वंश** का शासन था, जिनकी राजधानी **चंद्रावती** थी । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास **अबुर्दा देवी मंदिर** चली जाती है । पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ौसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी । **पुष्पावती** ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होंने अन्यत्र जाने का फैसला किया । रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित **वीरनगर** नामक स्थान पर पहुंची। यहाँ वह **कमलाबाई** नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गई। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम **गुहिल** रख दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।

- बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था । भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे । वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया । बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला । गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहुँचा । लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था । अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आसपास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था । गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें । गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से कर नहीं लेंगे, और ना ही कभी भीलों पर अत्याचार करेंगे। **566** ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। **बप्पा रावल का जन्म** मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 191 वर्ष **713 ई.** में **ईडर** में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को **सिसोदिया** भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा साँगा, महाराणा प्रताप हुए।
- भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् **723** के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किन्तु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।
- परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारीत ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। चित्तौड़ पर अधिकार करना कोई आसान काम न था। अनुमान है कि बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । **सन् 712 ई.** में मुहम्मद कासिम से सिंध को जीता।
- **आदि वराह मंदिर** - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी । बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 35 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी । 738 ई. - अरब आक्रमणकारियों से युद्ध हुआ ये युद्ध वर्तमान राजस्थान की सीमा के भीतर हुआ बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल

हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुल रहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया **बप्पा रावल ने सिंध** के **मुहम्मद बिन कासिम** को पराजित किया बप्पा रावल ने गज़नी के शासक सलीम को पराजित किया बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है। सिसौदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासरंक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवतः जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है। एक दूसरे एकलिंग माहात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था।

- उन्होंने शासक बनने के बाद अपने वंश का नाम ग्रहण नहीं किया, बल्कि मेवाड़ वंश के नाम से नया राजवंश चलाया था, और **चित्तौड़ को अपनी राजधानी** बनाया । बप्पा रावल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे राज्य को अपना नहीं मानते थे, बल्कि शिवजी के एक रूप **'एकलिंग जी'** को ही उसका असली शासक मानते थे और स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते थे। लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होंने वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये। महाराणा संग्राम सिंह (राणा साँगा), उदय सिंह और महाराणा प्रताप जैसे श्रेष्ठ और वीर शासक उनके ही वंश में उत्पन्न हुए थे।
- **बप्पा रावल के सिक्के** : गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अजमेर के **सोने के सिक्के को बप्पा रावल** का माना है। इस सिक्के का तोल 11.5 ग्रेन **(65 रत्ती)** है। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है, **बाई ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग** बना है। इसके दाहिनी ओर नंदी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठा है। शिवलिंग और नंदी के नीचे दंडवत् करते हुए एक पुरुष की आकृति है। सिक्के के पीछे की तरफ चमर, सूर्य, और छत्र के चिह्न हैं। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दूध पीता हुआ बछड़ा है। ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिवभक्ति और उसके जीवन की कुछ घटनाओं से संबद्ध हैं। बप्पा रावल के बारे में कुछ तथ्य द्वारा बप्पा रावल को **कालभोजादित्य** के नाम से भी जाना जाता है इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था। 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया। बप्पा रावल को **हारीत ऋषि** के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है।
- **एकलिंग जी का मंदिर** - उदयपुर के उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित इस मंदिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल ने करवाया । इसके निकट हारीत ऋषि का आश्रम है।
- 753 ई. में बप्पा रावल ने 39 वर्ष की आयु में सन्यास लिया। इनका समाधि स्थान एकलिंगपुरी से उत्तर में एक मील दूर स्थित है। इस तरह इन्होंने कुल 19 वर्षों तक शासन किया। बप्पा रावल का देहान्त **नागदा** में हुआ, जहाँ इनकी समाधि स्थित है। शिलालेखों में वर्णन - **कुम्भलगढ़ प्रशस्ति** में बप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है आबू के शिलालेख में बप्पा रावल का वर्णन मिलता है कीर्ति स्तम्भ शिलालेख में भी बप्पा रावल का वर्णन मिलता है रणकपुर प्रशस्ति में बप्पा रावल व कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है। हालांकि आज के इतिहासकार इस बात को नहीं मानते । कर्नल जेम्स टॉड को 8वीं सदी का शिलालेख मिला, जिसमें मानमोरी (जिसे बप्पा रावल ने पराजित किया) का वर्णन मिलता है। कर्नल जेम्स टॉड ने इस शिलालेख को समुद्र में फेंक दिया।
- यह हारीत ऋषि का अनुयायी था । **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- 734 ई. में मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ पर कब्जा किया।
- राजधानी - नागदा (उदयपुर) सास बहु का मंदिर, नागदा में एक लिंग मंदिर (शिवजी) का निर्माण करवाया।
- मेवाड़ के राजा खुद को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।
- बप्पा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुये गजनी तक चला गया।

Note – कर्नल जेम्स टॉड ने कहा – कुंभा में लाखा जैसी प्रेम कला एवं हम्मीर जैसी शक्ति थी। जिसने मेवाड़ के झंडे को घग्घर नदी के तट पर फहराया।

रायमल (1473-1509)

- राणा रायमल ने लगभग 36 वर्षों (1473-1509 ई.) तक शासन किया। किन्तु उसमें अपने पिता की भांति शूरवीरता एवं कूटनीतिज्ञता का अभाव था। परिणामस्वरूप मेवाड़ के कुछ अधीनस्थ क्षेत्र उसके हाथ से निकल गए। आबू, तारागढ़ और सांभर तो उदा के शासनकाल में ही मेवाड़ से अलग हो चुके थे।
- रायमल ने इन्हें पुनः अधिकृत करने का कोई प्रयास नहीं किया। अब मालवा के सुल्तान ने रणथम्भौर, टोडा और बूँदी को अपने अधिकार में कर लिया। टोडा के शासक राव सुरतान ने मेवाड़ में आश्रय इस आशा से लिया था कि शायद मेवाड़ से उसे सहायता मिल जाए। राव सुरतान के साथ उसकी पुत्री तारा भी थी, जो अद्वितीय सुंदर और वीरांगना थी। राव सुरतान ने प्रतिज्ञा कर रखी थी, कि वह अपनी पुत्री का विवाह उस शूरवीर से करेगा जो टोडा जीतकर उसे वापस दिलाएगा।
- राणा रायमल के द्वितीय पुत्र जयमल ने तारा की सुंदरता पर आसक्त होकर उससे विवाह करने की जिद की तथा राव सुरतान के साथ अत्यंत ही अशिष्ट व्यवहार किया। क्रुद्ध राव सुरतान ने जयमल को मौत के घाट उतार दिया और राणा को सूचित कर दिया। जयमल की मृत्यु के बाद रायमल के ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज ने तारा से विवाह करने का निश्चय कर टोडा पर आक्रमण कर जीत लिया।
- कुंवर पृथ्वीराज ने टोडा का राज्य राव सुरतान को सौंप दिया तथा वचनबद्ध राव सुरतान ने तारा का विवाह पृथ्वीराज से कर दिया। राणा रायमल का ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज था और जयमल दूसरा साँगा तीसरा पुत्र था। जयमल राव सुरतान के हाथों मारा गया तथा सिरोही लौटते समय रास्ते में अपने बहनोई द्वारा दिए गए विषाक्त लड्डू खाने से पृथ्वीराज की मृत्यु हो गई। इसी प्रकार रायमल के दो ज्येष्ठ पुत्रों का स्वर्गवास हो गया।

महाराणा साँगा (1509-1528)
या
राणा साँगा (1509-1528 ईस्वी)

- प्रारंभिक जीवन : राणा साँगा (महाराणा संग्राम सिंह) (राज 1509-1528) उदयपुर में सिसोदिया राजपूत राजवंश के राजा थे तथा राणा रायमल के सबसे छोटे पुत्र थे।
- मेवाड़ योद्धाओं की भूमि है, यहाँ कई शूरवीरों ने जन्म लिया और अपने कर्तव्य का प्रवाह किया। उन्हीं उत्कृष्ट मणियों में से एक थे राणा साँगा, साँगा का पूरा नाम महाराणा संग्राम सिंह था। वैसे तो मेवाड़ के हर राणा की तरह इनका पूरा जीवन भी युद्ध के इर्द-गिर्द ही बीता लेकिन इनकी कहानी थोड़ी अलग है। एक हाथ, एक आँख, और एक पैर के पूर्णतः क्षतिग्रस्त होने के बावजूद इन्होंने ज़िन्दगी से हार नहीं मानी और कई युद्ध लड़े।
- राणा साँगा अदम्य साहसी थे। इन्होंने सुल्तान मोहम्मद शासक माण्डु को युद्ध में हराने व बन्दी बनाने के बाद उन्हें उनका राज्य पुनः उदारता के साथ सौंप दिया, यह उनकी बहादुरी को दर्शाता है। बचपन से लगाकर मृत्यु तक इनका जीवन युद्धों में बीता। इतिहास में वर्णित है, कि महाराणा संग्राम सिंह की तलवार का वजन 20 किलो था।
- राणा रायमल के तीनों पुत्रों (कुंवर पृथ्वीराज, जयमल तथा राणा साँगा) में मेवाड़ के सिंहासन के लिए संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। एक भविष्यकर्ता के अनुसार साँगा को मेवाड़ का शासक बताया जाता है ऐसी स्थिति में कुंवर पृथ्वीराज व जयमल अपने भाई राणा साँगा को मौत के घाट उतारना चाहते थे, परन्तु साँगा किसी प्रकार यहाँ से बचकर अजमेर पलायन कर जाते हैं तब सन् 1509 में अजमेर के कर्मचन्द पंवार की सहायता से राणा साँगा को मेवाड़ राज्य प्राप्त हुआ। महाराणा साँगा ने सभी राजपूत राज्यों को संगठित किया और सभी राजपूत राज्य को एक छत्र के नीचे लाएं। उन्होंने सभी राजपूत राज्यों से संधि की और इस प्रकार महाराणा साँगा ने अपना साम्राज्य उत्तर में पंजाब सतलज नदी से लेकर दक्षिण में मालवा को जीतकर नर्मदा नदी तक कर दिया। पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में बयाना भरतपुर ग्वालियर तक अपना राज्य विस्तार किया इस प्रकार मुस्लिम सुल्तानों की डेढ़ सौ वर्ष की सत्ता के इतने बड़े क्षेत्रफल पर हिंदू

साम्राज्य कायम हुआ इतने बड़े क्षेत्र वाला हिंदू सम्राज्य दक्षिण में विजयनगर समाज्य ही था। दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी को खातौली व बाड़ी के युद्ध में 2 बार परास्त किया और गुजरात के सुल्तान को हराया व मेवाड़ की तरफ बढ़ने से रोक दिया। बाबर को खानवा के युद्ध में पूरी तरह से राणा ने परास्त किया और बाबर से बयाना का दुर्ग जीत लिया। इस प्रकार राणा साँगा ने भारतीय इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ दी। राणा साँगा 16वीं शताब्दी के सबसे शक्तिशाली शासक थे, इनके शरीर पर 80 घाव थे। इनको हिंदुपत की उपाधि दी गयी थी। इतिहास में इनकी गिनती महानायक तथा वीर के रूप में की जाती है ।

- महाराणा साँगा के पिता रायमल व माता **शृंगार देवी** थी।
- महाराणा साँगा का जन्म 12 अप्रैल, 1482 को हुआ तथा साँगा 1509 ई. में मेवाड़ का शासक बना तथा इनका राज्याभिषेक हुआ ।
- महाराणा साँगा को हिन्दूपत व सैनिकों का भग्नावशेष (शरीर पर लगभग 80 घाव) नामों से जाना जाता है। - महाराणा साँगा राजस्थान का अंतिम हिन्दू राजा था, जिसके सेनापतित्व में पूरे राजपूतों ने मुगलों को भारत से बाहर निकालने का प्रयास किया।

खतौली का युद्ध - राणा साँगा ने 1517 में खातौली (बूँदी) के युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया।

बाड़ी का युद्ध - राणा साँगा ने 1518 में बाड़ी (धौलपुर) के युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया।

गागरोन का युद्ध - राणा साँगा ने 1519 में गागरोन के युद्ध (झालावाड़) में मालवा के महमूद खिलजी द्वितीय को पराजित किया।

प्रश्न- .सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट में से सही उत्तर चुनिए - [RAS. 2021]

सूची-I

(A) गागरोण का युद्ध (B) सारंगपुर का युद्ध

(C) सुमेल का युद्ध (D) साहेबा का युद्ध

सूची-II

(i) 1519 ई.
(ii) 1544 ई.
(iii) 1437 ई.
(iv) 1541- 42 ई.

कूट -

(1) A-(i), B-(iii), C-(ii), D-(iv)

(2) A-(ii), B-(iii), C-(iv), D-(i)

(3) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)

(4) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)

Ans. 1

बयाना का युद्ध - 16 फरवरी, 1527 ई. में हुये बयाना के युद्ध में साँगा के सैनिकों ने बाबर के सैनिकों (दुर्ग रक्षक बाबर का बहनोई मेहंदी ख्वाजा) को हराकर बयाना दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

- **खानवा का युद्ध** - यह युद्ध राणा साँगा एवं बाबर के मध्य 17 मार्च, 1527 को लड़ा गया। खानवा के युद्ध में राणा साँगा बाबर से पराजित हो गया। खानवा के युद्ध (रुपवास-भरतपुर) में बाबर ने 'जिहाद/धर्म युद्ध का नारा दिया। इस युद्ध में साँगा ने **'पाती पेरवन** प्रथा का प्रयोग किया जिसके तहत इसमें राजस्थान के 7 राजा, 9 राव तथा 104 सामन्त शामिल हुए। बाबर ने इस युद्ध में **'तुलुगमा युद्ध** पद्धति का प्रयोग किया जिसमें उनकी सेना के पास तोपें एवं बंदूकें थी। युद्ध में साँगा के सिर पर एक तीर लगा जिससे साँगा घायल हो थे, उन्होंने अपना राजचिह्न एवं हाथी सादड़ी के झाला अज्जा को दे दिए एवं युद्ध का मैदान छोड़कर बसवा गांव (दौंसा) पहुँच गए । बसवा (दौंसा) में साँगा का चबूतरा बना हुआ है।
- साँगा को **कालपी (मध्यप्रदेश)** नामक स्थान पर साथियों ने जहर देकर 30 जनवरी, 1528 ई. को मार दिया।
- महाराणा साँगा का दाह संस्कार माण्डलगढ़ में किया गया, जहाँ इसकी छतरी बनी हुई है।

- महाराणा साँगा ने इब्राहीम लोदी के भाई **महमूद लोदी** व **हसन खाँ मेवाती** दो अफगानों को शरण दी थी।
- मेवाड़ के महाराणा साँगा ने प्रतिज्ञा ली थी, कि "जब तक वह अपने शत्रु को पराजित नहीं कर लेगा, तब तक चित्तौड़ के फाटक में प्रवेश नहीं करेगा"

प्रश्न- निम्नलिखित युद्ध राजस्थान इतिहास में सीमा चिन्ह हैं – [RAS Pre-26.10.2013]

(1) खानवा का युद्ध
(2) भटनेर का युद्ध
(3) सुमेल-गिरी का युद्ध
(4) हल्दी-घाटी का युद्ध

इन युद्धों को सही तिथिक्रम में रखते हुए, सही उत्तर ना चयन कीजिये –
(1) 2, 1, 3, 4 (2) 1, 2, 3, 4
(3) 1, 3, 4, 2 (4) 1, 2, 4, 3

Ans. 1

<u>राणा विक्रमादित्य</u> :-

- महाराणा साँगा की मृत्यु के बाद 5 फरवरी, 1528 के आस-पास चित्तौड़ राज्य का स्वामी राणा रतनसिंह हुआ। महाराणा रतन की 1531 ई. में बूँदी के राजा सूरजमल के साथ लड़ाई में मृत्यु हो गई साथ ही सूरजमल भी मारा गया। फिर रतनसिंह का छोटा भाई विक्रमादित्य 1531 ई. में मेवाड़ का राजा बना। उस समय विक्रमादित्य छोटी उम्र में था। अतः राज कार्य का संचालन उनकी माता हाड़ा रानी कर्मवती करती थीं । उस समय गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने सन् 1533 ई. मे चित्तौड़ पर आक्रमण किया।
- रानी कर्मवती ने बादशाह हुमायूँ से सहायता मिलने की आशा पर अपना एक दूत हुमायूँ के पास भेजा लेकिन हुमायूँ ने सहायता नहीं की। अंततः कर्मवती ने सुल्तान से संधि कर ली। 24 मार्च, 1533 ई. को सुल्तान चित्तौड़ से लौट गया परन्तु 1534 ई. में सुल्तान ने फिर आक्रमण किया। महाराणा विक्रमादित्य को उदयसिंह सहित बूँदी भेज दिया गया और युद्ध तक देवलिये के रावत बाघसिंह को महाराणा का प्रतिनिधि बनाया गया। वीर रावत बाघसिंह चित्तौड़ दुर्ग के पाड़नपोल दरवाजे के बाहर तथा राणा सज्जा व सिंहा हनुमान पोल के बाहर लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- लड़ाई में सेनापति **रूमी खाँ** के नेतृत्व में बहादुर शाह की सेना विजयी हुई और हाडी रानी कर्मवती ने जौहर किया। यह चित्तौड़ का दूसरा साका कहलाता है। लेकिन बादशाह हुमायूँ ने तुरंत ही बहादुरशाह पर हमला कर दिया। जिससे सुल्तान कुछ साथियों के साथ माण्डू भाग गया। बहादुर शाह के हारने पर मेवाड़ के सरदारों ने पुनः चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया। फिर विक्रमादित्य पुनः वहाँ के शासक हो गए।
- बनवीर ने उदयसिंह का वध करना चाहा लेकिन स्वामीभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदय सिंह को बचा लिया। मेवाड़ का स्वामी बनकर बनवीर राज्य करने लगा। उदयसिंह द्वितीय को लेकर पन्नाधाय कुंभलनेर पहुंची। वहां के किलेदार **आशा देवपुरा** ने उन्हें अपने पास रख लिया।

<u>महाराणा उदयसिंह (1537-1572 ई.)</u>

- 1537 में कुछ सरदारों ने उदयसिंह को मेवाड़ का स्वामी मानकर कुम्भलगढ़ में राज्याभिषेक कर दिया। उदयसिंह ने सेना एकत्रित कर कुंभलगढ़ से ही चित्तौड़ पर चढ़ाई की। बनवीर मारा गया। 1540 ई. में उदयसिंह अपने पैतृक राज्य का स्वामी बना। 1559 ई. में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर की नींव डाली।
- मुग़ल बादशाह अकबर ने 23 अक्टूबर, 1567 को चित्तौड़ किले पर आक्रमण किया। महाराणा उदयसिंह ने मालवा के पदच्युत शासक राज बहादुर को अपने यहाँ शरण देकर अकबर के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण करने का अवसर प्रदान कर दिया। महाराणा उदयसिंह राठौड़ जयमल और रावत पत्ता को सेनाध्यक्ष नियुक्त कर कुछ सरदारों के साथ मेवाड़ के पहाड़ों में चले गए। अकबर से युद्ध में **जयमल और कल्ला राठौड़** हनुमान पोल व भैरव पोल के बीच और पत्ता रामपोल के भीतर वीरगति को प्राप्त हुए।
- राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया। **25 फरवरी, 1568** को अकबर ने किले पर अधिकार कर लिया। यह चित्तौड़ दुर्ग का **तीसरा साका** था। **जयमल और पत्ता** की वीरता पर प्रसन्न होकर अकबर ने आगरा

पर सुमित्र से आगे की वंश परम्परा दी जा रही है। सुमित्र के दो वंशजों में कूर्म के वंशज रोहितास (बिहार), निषिध, ग्वालियर और नरवर होते हुए राजस्थान में आये जो कछवाह कहलाते हैं। दूसरे वंशज विश्वराज के वंशधर क्रमशः मूलराय व राष्ट्रवर के नाम से इनके वंशज राष्ट्रवर (राठौड़) कहलाये। बाद के संस्कृत साहित्य में कहीं कहीं राष्ट्रवर (राठौड़ों) का संस्कृतनिष्ठ शब्द 'राष्ट्रकूट' या 'राष्ट्रकूटियो' भी लिखा है।

सूरज प्रकाश के लेखक करणीदान व टॉड के अनुसार तेरह खाँपों की उत्पत्ति इस प्रकार हुई –

1. दानेश्वरा :-
धर्मबिम्ब एक दानी व्यक्ति हुआ। अतः इनके वंशज **दानेश्वरा** कहलाये। (Annals and antiqueties of raj-अनुसार केवल कुमार ठाकुर) इनको **कमधज** भी कहा जाता था।

2. अभैपुरा :-
पुंज के दूसरे पुत्र भानुदीप कांगड़ा (हि. प्र.) के पास था। देवी ज्वालामुखी ने उसे अकाल के भय से रहित कर दिया अर्थात् अभय बना दिया। इस कारण उसके वंशज अभैपुरा कहलाये।

3. कपालिया :-
पुंज के तीसरे पुत्र वीरचंद थे। इसने शिव को कपाल चढ़ा दिया था। इस कारण इनके वंशज कपालिया कहलाये।

4. कुरहा :-
पुंज के पुत्र अमरविजय ने परमारों से कुरहगढ़ जीता । संभवतः कुरह स्थान के नाम से **कुरहा** कहलाये।

5. जलखेड़ा :-
पुंज के पुत्र सजनविनोद ने तंवरों को परास्त किया और जलंधर की सहायता से जल प्रवाह में बहा दिया। अतः इसके वंशज जलखेड़ा कहलाये।

6. बुगलाणा :-
पुंज के पुत्र पदम बुगलाणा स्थान के नाम से बुगलाणा कहलाये।

7. अहर :-
पुंज के पुत्र अहर के वंशज 'अहर' कहलाये। बंगाल की तरफ चले गए।

8. पारकरा :-
पुंज के पुत्र वासुदेव ने कन्नौज के पास कोई पारकरा नामक नगर बसाया अतः उसके वंशज **'पारकर'** कहलाये।

9. चंदेल :-
दक्षिण में पुंज के पुत्र उग्रप्रभ ने चंदी व चंदावर नगर बसाये अतः चंदी स्थान के नाम से चंदेल कहलाये। (चंदेल-चंद्रवंशी इनसे भिन्न हैं ।)

10. वीर :-
सुबुद्धि या मुक्तामान बड़ा वीर हुआ। इसे वीर की उपाधि दी। इस कारण इनके वंशज वीर राठौड़ कहलाये।

11. दरियावरा :-
भरत ने बरियावर स्थान पर राज्य किया। स्थान के नाम से ये 'बरियावर' कहलाये।

12. खरोदिया :-
कृपासिंधु (अनलकुल) खरोदा स्थान के नाम से खरोदिया राठौड़ कहलाये।

13. जयवंशी :-
चंद्र व इसके वंशज जय पाने के कारण जयवंशी कहलाये।

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है ।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं । ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं । मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिद्मल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ हैं साथ ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।
- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली

की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।

- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँड़ा (1383 – 1423)

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है । अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी ।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया ।
- राव चूँड़ा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया ।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427)

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

राव रणमल, - (1427 – 1438)

राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था ।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया ।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की ।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।
- रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।
- रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।
- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था ।

2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली ।
3. चूँड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया।
4. राव जोधा ने 1453 ई. में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया ।
5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया ।
6. राव जोधा ने 1459 ई. में चिड़ियाटुक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया ।
7. दुर्ग के निर्माण के राव जोधा ने अपनी राजधानी मण्डौर से जोधपुर स्थानातंरित की ।
8. राव जोधा ने लगभग 50 वर्ष तक शासन किया ।
9. इसी समय इनकी एक रानी हाड़ी जसमा देवी ने किले के पास 'रानीसर' तालाब बनवाया ।
10. राव जोधा ने अपनी हाड़ी रानी जसमा देवी के मोह में पड़कर उसके पुत्र सातलदेव को अपना उत्तराधिकारी बनाया, जबकि हकदार राव बीका था यहीं से उत्तराधिकार को लेकर कलह का बीज पड़ गया ।
11. राजा जोधा की मृत्यु 1489 ई. में हुई ।

मेहरानगढ़ दुर्ग

1. ज्ञात स्त्रोतों से यह विदित होता है कि मेहरानगढ़ की नींव का पहला पत्थर करणी माता (रिद्धि बाई) ने रखा था ।
2. इसकी नींव में राजा राम खड़ेला नामक व्यक्ति को जिंदा चुनवाया गया था ।
3. किपलिंग ने मेहरानगढ़ दुर्ग के लिए कहा कि – इस दुर्ग निर्माण शायद परियों व फरिश्तों ने किया था' ।
4. इसमें चामुण्डा माता का मंदिर, मानप्रकाश पुस्तकालय, फूलमहल , कीरत व धन्ना की छतरी इत्यादि के दर्शन होते हैं, तथा किलकिला, शम्भू बाण व गजनी खां, जो कि तोपों के नाम हैं, भी यहाँ देखने को मिलती है ।

आँवल-बावल की संधि (1453 ई.)

1. आँवल-बावल की संधि राणा कुम्भा और राव जोधा के मध्य हुई। जोधा ने अपनी पुत्री शृंगारदेवी का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल से कर दिया ।
2. राव जोधा द्वारा अपने पुत्रों और प्रमुख सरदारों में राज्य बाँटने के कारण राव जोधा को मारवाड़ रियासत में सामन्त प्रथा का वास्तविक संस्थापक माना जाता है ।
3. राव जोधा के पांचवे पुत्र राव बीका जी ने 'बिकानेर की स्थापना की तथा उसके पीछे इसी सामन्त प्रथा को एक कारण माना जाता है, जो राव जोधा ने स्थापित की ।

राव सातल (1489 – 1492)

1. जोधा के पुत्र राव सातल ने सातलमेर कस्बा बसाया था । उसकी भटियाणी रानी फूलां में जोधपुर में कुलेलाव तालाब बनवाया ।
2. अजमेर के हाकिम मल्लू खाँ के साथ पीपाड़ (जोधपुर) के युद्ध में घायल हो जाने के कारण राव सातल की मृत्यु (1492 ई.) हो गई । इस युद्ध में राव सातल विजयी रहा था ।

घुड़ला नृत्य का इतिहास और सातलदेव

- यह घटना पीपाड़ (जोधपुर) की है पीपाड़ में 140 कुंवारी कन्याएं गणगौर की पूजा कर रही थी । तभी वहां अजमेर के सूबेदार मल्लू खाँ का सेनापति घुड़ले खाँ आ गया और सभी कन्याओं को बंधक बना लिया । तब राव सातल देव ने घुड़ले खाँ पर आक्रमण कर सभी कन्याओं को मुक्त कराया तथा मुक्त होने की खुशी में कन्याएं नृत्य करने लगी । उस नृत्य को ही घुड़ला नृत्य कहा जाता है । यह घटना चैत्र कृष्ण अष्टमी को हुई तभी से इस तिथि को प्रतिवर्ष घुड़ला नृत्य किया जाता है । इस नृत्य की शुरुआत घुड़ले खाँ की पुत्री गिन्दोली ने की थी ।

राव सूजा 1492 – 1515

- यह राव जोधा का दूसरा पुत्र था । इसके समय बीकानेर के राव बीका ने जोधपुर पर आक्रमण किया था ।

- जसवन्त सिंह का राज्याभिषेक 1638 ई. में आगरा में हुआ। उस समय जसवंत सिंह का संरक्षक ठाकुर **राजसिंह कूम्पावत** था।
- जसंवत सिंह शाहजहाँ का सूबेदार था।
- बादशाह शाहजहाँ ने उसे 'महाराजा' की उपाधि प्रदान की।
- **जोधपुर तथा जैसलमेर** के मध्य पोकरण को लेकर जो विवाद था उसका सुलझवाड़ा भी शाहजहाँ ने ही कराया था।
- मुग़ल उत्तराधिकारी संघर्ष-शाहजहाँ के पुत्रों के मध्य हुए उत्तराधिकारी संघर्ष में जसवन्त सिंह ने दाराशिकोह का साथ दिया था।

धरमत (उज्जैन) का युद्ध (15 अप्रैल, 1658 ई.)

- उत्तराधिकार को लेकर शाहजहाँ के पुत्रों में युद्ध हुआ इस युद्ध में जसवंत सिंह ने धाराशिकोह का साथ दिया क्योंकि शाहजहाँ चाहता था कि धाराशिकोह ही उसका उत्तराधिकारी बने।
- इस युद्ध में केन्द्रीय सेना का नेतृत्व महाराजा जसवन्तसिंह और कासिम खाँ ने किया परन्तु औरंगजेब ने इस सेना को पराजित कर दिया।
- धरमत के युद्ध में पराजय के बाद जसवन्तसिंह जोधपुर आया तो उसकी हाड़ी रानी जसवन्तदे (बून्दी के शत्रुशाल हाड़ा की पुत्री) ने किले के द्वार बंद करवा दिये थे।

खजवा के मैदान (इलाहाबाद) का युद्ध (5 जनवरी, 1659 ई.)

- इस युद्ध में जसवन्तसिंह औरंगजेब की ओर से शामिल हुआ परन्तु युद्ध के दौरान शुजा से मिल गया तथा पराजित हुआ इसमें औरंगजेब की विजय हुई।

दौराई का युद्ध

- उत्तराधिकार को लेकर धाराशिकोह व औरंगजेब की सेना के मध्य यह द्वितीय युद्ध था, जो कि 1659 ई. में अजमेर के निकट दौराई नामक स्थान पर हुआ। इस युद्ध में भी औरंगजेब की विजय हुई, तथा वह बादशाह बना और जसवन्त सिंह ने भी उसकी बादशाहत स्वीकार की तथा धाराशिकोह को पकड़कर अलवर के **कांकनवाड़ी** किले में कैद कर दिया गया।
- धाराशिकोह का साथ देने के कारण औरंगजेब जसवन्त सिंह से पहले ही नाराज था, तथा उसने उसको दक्षिण भारत में मराठा शिवाजी को पराजित करने के लिए भेजा। परतु जसवन्त सिंह असफल रहा वह शिवाजी के विद्रोह को दबा न सका।
- जसवन्त सिंह ने औरंगाबाद के निकट एक नया नगर बसाया जिसे जसवन्तपुरा नाम दिया गया।

जसवन्त सिंह की उपलब्धियां

- शाहजहाँ ने जसवन्तसिंह को 7000 का मनसब दिया था जिसे औरंगजेब ने भी बहाल रखा / बादशाह औरंगजेब ने महाराजा जसवन्तसिंह को निम्न प्रान्तों की सूबेदारी पर नियुक्त किया था।
  i. गुजरात (1659 ई.)
  ii. दक्षिण (1662 ई.)
  iii. काबुल (1673 ई.)
- काबुल की सूबेदारी के दौरान ही 28 नवम्बर, 1678 ई. को जसवन्त सिंह की मृत्यु अफगानिस्तान में पिण्डारियों के खिलाफ सैन्य अभियान के दौरान जमरूद नामक स्थान पर हुई।
- जसवन्त सिंह की मृत्यु पर औरंगजेब ने दर्वाजिए क्रुफ शिकस्त अर्थात कहा कि 'आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया।'

जसवन्त सिंह की रचनाएँ

- भाषा भूषण
- अपरोक्ष सिद्धान्तसार
- प्रबोध चन्द्रोदय

प्रश्न- निम्नलिखित में कौन सा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है? (RAS. 2021)

पुस्तकें – लेखक

(A) नेह तरंग - सवाई प्रतापसिंह

(B) नागदमण – सांयाजी झूला

(C) रणमल छन्द - श्रीधर व्यास

(D) भाषा भूषण – महाराजा जसवंत सिंह

(1) A (2) D

(3) B (4) C

Ans. D

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

फलतः इस निर्णय का विरोध करते हुए दुर्गादास एक राजकुमार (अजीत सिंह) के साथ भाग गया। तथा राठौड़ों ने अजीत सिंह को उत्तराधिकार मान लिया जबकि दूसरे बच्चे को औरंगजेब नए मुसलमान बनाकर मुहम्मदी राज नाम दिया।

औरंगजेब ने समस्या समाधान में अदूरदर्शिता दिखाते हुए मारवाड़ को मुगल साम्राज्य में मिलाने का निश्चय किया। साथ ही मारवाड़ की राजधानी जोधपुर पर अधिकार कर लिया। वहाँ मन्दिर तोड़ने के लिए मुहतसिब भी तैनात कर दिए गए। और अप्रैल 1679 ई. में जजिया कर को पुनः लगा दिया और जसवन्त सिंह का सिंहासन 56 लाख रूपये में नागौर को बेंच दिया।

पीढ़ियों से मुगलों के लिए अपना रक्त बहा रहे राजपूतों के साथ औरंगजेब का यह व्यवहार उसकी अदूरदर्शिता का एक उदहारण है। उसकी इस नीति से मुग़ल सरदारों में भी बैचेनी फैली जबकि राठौड़ों ने दुर्गादास के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया।

अजीत सिंह (जसवन्त सिंह का पुत्र) को अंततः 1909 ई. में मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ने शासक मान लिया। इस तीस वर्षीय युद्ध (1679-1709 ई. तक) के नायक दुर्गादास की तुलना कर्नल टॉड नए महान योद्धा युसीलीज से की है।

मेवाड़ :-

मेवाड़ के राजसिंह में भी राठौड़ों का समर्थन किया क्योंकि संभवतः अजीत सिंह की माता मेवाड़ के राणा की रिश्तेदार थी। मेवाड़ के राजा ने औरंगजेब का उत्तराधिकार युद्ध में समर्थन किया था तथा औरंगजेब ने राणा को माँडल, बिदनूर और माँडलगढ़ के परगने भी दिए थे, परन्तु कालान्तर में जजिया आरोपित करने के कारण मेवाड़ से मुगलों के संबंध बिगड़ गए।

इन दो राजपूतों के अतिरिक्त अन्य राजपूत राज्यों से औरंगजेब के संबंध सामान्य रहे। इस प्रकार कुल मिलाकर औरंगजेब की राजपूत नीति मुग़ल साम्राज्य के लिए नुकसानदेह सिद्ध हुई।

सारांश

- मुहणौत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने गुर्जर प्रदेश को कू- चे - लो तथा इसकी राजधानी का नाम , पीलोमोलो / भिलामार" बताया है,
- डॉ. ओझा गुर्जर प्रतिहारों को क्षत्रीय मानते है ,
- नाग भट्ट प्रथम 730ई. में शासक बना
- नागभट्ट के समय दंतिदुर्ग ने हिरण्यगर्भ यज्ञ किया
- त्रिकोणात्मक संघर्ष की शुरुआत वत्सराज ने की।
- नागभट्ट IInd ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया।
- मिहिर भोज Ist ने आदिवराह की उपाधि धारण की इसका उल्लेख ग्वालियर अभिलेख में मिलता है।
- राजकवि राजशेखर महेन्द्रपालप्रथम का राजकवि था।
- इतिहासकार B.N. पाठक ने महेन्द्रपाल प्रथम को हिन्दू भारत का अंतिम महान सम्राट कहा
- मुहणौत नैणसी ने गुहिलों की 24 शाखाओं का वर्णन किया है।
- बप्पा रावल को C.C. वैध ने 'चार्ल्स मार्टल' कहा है।
- अल्लट ने हरियादेवी से विवाह किया।
- जैत्र सिंह ने इल्तुतमिस को परास्त किया।
- रतनसिंह के समय अल्लाउद्दीन ने आक्रमण किया तथा प्रथम साका (1303) में हुआ।
- राणा हम्मीर को विषम घाटी पंचानन कहा गया है।
- राणा लाखा को भीष्म पितामह कहा गया है।
- राणा कुंभा 1433 में मेवाड़ का शासक बना
- सारंगपुर युद्ध -1437
- चंपानेर संधि - 1456
- कुंभा ने मेवाड़ के 84में से 32 दुर्गों का निर्माण करवाया
- राणा सांगा - हिंदुपत
- खातोली का युद्ध -1517
- खानवा का युद्ध -17 मार्च 1527
- महाराणा विक्रमादित्य
- चितौड़ का द्वितीय साका -1568
- महाराणा प्रताव का राज्याभिषेक 28Feb 1572को हुआ।
- हल्दी घाटीयुद्ध -18 जून 1576

- दिवेर युद्ध – 1582
- मुग़ल मेवाड़ संधि -1615
- राजसिंह ने 'विजय कतकातु' की उपाधि धारण की
- कृष्णाकुमारी विवाद – महाराजा भीमसिंह व जगतसिंह मध्य
- महाराणा सज्जनसिंह को किसर -ए -हिंद की उपाधि दी गई ।
- मारवाड़ में राठौर वंश की स्थापना राव सिहा ने 1240ई. में की थी ।
- राव चुड़ा ने मण्डौरको अपनी राजधानी बनाया
- राव मल्लिनाथ ने अपनी राजधानी ' मेवानगर'' बनायी ।
- राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया तथा मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया।
- ऑवल – बॉवल की संधि – 1453ई.
- राव मालदेव की स्ठी रानी 'उमादे'
- राव मालदेव व शेरशाह के मध्य युद्ध
  - गिरी सुमेल युद्ध – जनवरी ,1544
  - कूंपा व जैता के शौर्य के लिए याद किया जाता हैं ।
  - शेरशाह – " मैं मुट्ठीभर बाजरे के लिए हिंदुस्तान की बादशाहत खो देता"।
- चंद्रसेन – भुला बिसरा राजा, मारवाड़ का प्रताप
- नागौर दरबार -1570ई
- मोटा राजा उदयसिंह प्रथम राजा जिसने मुग़लों की अधीनता स्वीकार की तथा मुग़लो से वैवाहिक संबंध स्थापित किए ।
- मतीरे कि राड़- महाराणा अमरसिंह तथा कर्णसिंह
- शाहजहाँ ने जसवंत सिंह को 7000मनसब दिया
- <u>दुर्गादास राठौड़ -</u>
  - राजपूताने का गेरीबाबड़ी'
  - राठौड़ का युलीसेज
- गौरा को मारवाड़ की पन्नाधाय कहा जाता हैं
- <u>गिंगोली युद्ध</u>
  - भीमसिंह तथा जगतसिंह IInd के मध्य 1807 में हुआ
- 1857 की क्रांति के समय जोधपुर का शासक तख्तसिंह
- उम्मेद सिंह ने जवाई बांध का निर्माण करवाया
- कच्छवाहा वंश का संस्थापक कोकिल देव था
- भारमल प्रथम शासक जिसने अंग्रेजो की अधीनता स्वीकार की
- मानसिंह को अकबर ने फर्जन्द की उपाधि दी ।
- सवाई जयसिंह ने 1734 ई. में हुरड़ा सम्मेलन आयोजित किया ।
- सवाई जयसिंह ने दिल्ली, बनारस, उज्जैन, मथुरा, जयपुर में 5 सौर वेंध शालाओं का निर्माण कराया।
- सवाई रामसिंह ने 1876 ई. में जयपुर को गुलाबी रंग से रंगवाया ।
- राव बिका ने करणी माता के मूल मंदिर का निर्माण करवाया
- राव जैतसी ने खानवा के युद्ध में अपने पुत्र कल्याणमल को भेजा ।
- पृथ्वीराज राठौर नागौर दरबार में उपस्थित हुआ
- महाराजा रायसिंह को राजपूताने का कर्ण कहा जाता हैं ।
- सूरतसिंह ने हनुमानगढ़ बसाया
- एकीकरण विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली प्रथम रियासत बीकानेर थी ।
- सार्दुलसिंह बीकानेर के राठौर वंश अंतिम शासक था,
- किशनसिंह ने 1612में किशनगढ़ बसाया
- महाराजा सावंतसिंह ने कृष्ण भक्ति में अपना नाम नागरीदास रखा
- महाराजा सुमेरसिंह के समय किशनगढ़ को 25मार्च 1948 में राजस्थान संघ में मिला लिया गया
- मालवा के परमारों की उत्पति आबू से मानी जातीहैं।
- चूड़ामन जाट ने भरतपुर में जाट राज्य की स्थापना की,
- महाराजा सूरजमल ने लोहागढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया
- राजा केहर ने तनोटमाता मंदिर का निर्माण करवाया
- राव घड़सी ने जैसलमेर में घड़सीसर तालाब का निर्माण करवाया
- विजयपाल करौली का संस्थापक था ।
- हरवक्षपाल ने 15Nov. 1817 में अंग्रेजो से संधि की ।

अभ्यास प्रश्न

1. महाराणा अमरसिंह और खुर्रम के मध्य संधि कब हुई ?

(a) 5-2-1680 (b) 19-1-1567
(b) 5-2-1615 (d) 5-2-1667
उत्तर :- (c)

2. मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी, जिसके विवाह के कारण जयपुर एवं जोधपुर के मध्य संघर्ष हुआ, पुत्री थी?
(a) महाराणा भीमसिंह
(b) महाराणा जगतसिंह द्वितीय
(c) महाराणा उदयसिंह
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर :- a

3. महेन्द्रपाल उत्तराधिकारी था-
(a) देवराज का (b) महिरभोज का
(c) नागभट्ट का (d) वत्सराज का
उत्तर :- b

4. बीकानेर शासक करण सिंह कौन से मुगल सम्राट के समकालीन थे

(a) शाहजहां (b) औरंगजेब
(c) अकबर (d) हुमायूं
उत्तर :- a

5. दुर्गादास राठौड़ ने अपने जीवन के अंतिम दिन कहा गुजारे थे

(a) उज्जैन में (b) उदयपुर
(c) चितौड़ (d) भरतपुर
उत्तर :- a

6. किस राजपूत शासक को राजपुताना के कर्ण कहा जाता हैं
(a) महाराजा रायसिंह
(b) महाराजा जयसिंह
(c) राणा उदय सिंह
(d) राव जोधा

Ans :- a

7. महाराणा अमरसिंह और खुर्रम के मध्य संधि कब हुई ?
(a) 5-2-1680 (b) 19-1-1567
(c) 5-2-1615 (d) 5-2-1667

उत्तर :- c

8. मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी, जिसके विवाह के कारण जयपुर एवं जोधपुर के मध्य संघर्ष हुआ, पुत्री थी?
(a) महाराणा भीमसिंह
(b) महाराणा जगतसिंह द्वितीय
(c) महाराणा उदयसिंह
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:- a

9. 1527 ई. में महाराणा सांगा एवं बाबर के मध्य खानवा का युद्ध किस जिले में हुआ?
(a) भरतपुर (b) दौसा
(c) अलवर (d) उदयपुर
उत्तर :- a

10. जाटों का प्लेटो किसे कहा जाता है?
(a) गोकुल जाट (b) सूरजमल
(b) बदन सिंह (d) राजाराम जाट
उत्तर :- b

अध्याय – 8

राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए । राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमाना कर "लाग" वसूलती थी । इनके विरोध में समय-समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये । इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आंदोलन या किसान आंदोलन के रूप में जाने गए ।

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था । बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब ५५ साल तक चला ।

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897-1941 55 वर्षों तक) –

जिला भीलवाड़ा
बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली था ।
संस्थापक अशोक परमार
बिजौलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।
कारण
1. लगान की दरें अधिक थीं ।
2. लाग-बाग कई तरह के थे।
3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।
बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।
बिजौलिया के किसान लोगों में धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।
बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।
1. 1897 से 1916 नेतृत्व - साधु सीताराम दास
2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक
3. 1923 से 1941 नेतृत्व – माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान गंगाराम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था, इसकी दर 5 रूपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया)।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया । बिजौलिया किसान आंदोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे ।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आंदोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।

- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना दी जाती है।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया ।
- यह किसान आंदोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है ।
- इस किसान आंदोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया था ।
- किसान आंदोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पंछीड़ा गीत लिखा था ।

बेंगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन

- बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेंगू के किसानों ने अपने यहाँ लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आंदोलन शुरू किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेज खाँ हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक संधि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेंगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेन्ट कमिश्नर ट्रेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

प्रश्न- कथन

(A): ब्रिटिश दबाव के कारण मेवाड़ प्रशासन ने बिजोलिया आंदोलन से 1922 में समझौता किया।

(R): बिजोलिया जागीरदार ने 1922 के समझौते की भावना को मानने से इन्कार कर दिया।

इन दोनों वक्तव्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये तथा निम्नांकित कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिये : (RAS Pre- 26.10.2013)

कूट :

(1) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(2) A और R दोनों सही हैं तथा R,A की सही व्याख्या नहीं है।

(3) A सत्य है, परन्तु R असत्य है।

(4) A असत्य है, परन्तु R सत्य है।

Ans. 2

बूँदी का किसान आंदोलन

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगा । 'साद' प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन लिया जाने लगा । इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई। किसानों से अनेक करों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई। ये लागें दो प्रकार की थी।

1. स्थाई लाग

2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था।)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई जिसके कारण किसानों में

रोष उत्पन्न हुआ तथा वे आंदोलन करने को उतारू हो गए।

- बिजौलिया, बेंगू और अन्य क्षेत्र के किसानों के समान ही बूँदी राज्य के किसानों को भी अनेक प्रकार की लागतों (लगभग 25%), बेगार एवं ऊँची दरों पर लगान की रकम देनी पड़ रही थी।
- बूँदी राज्य में वसूले जा रहे कई करों के अलावा। रुपये पर। आने की दर से स्थाई रूप से युद्धकोष के लिए धनराशि ली जाने लगी। किसानों के लिए यह अतिरिक्त भार असहनीय था। किसान राजकीय अत्याचारों से परेशान होने लगे।
- मेवाड़ राज्य के बिजौलिया में किसान आंदोलन की कहानियां पूरे राजस्थान में व्याप्त हुई। अप्रैल 1922 में बिजौलिया की सीमा से जुड़े बूँदी राज्य के 'बराड़' क्षेत्र के पीड़ित किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को बरड़ किसान आंदोलन भी कहते हैं। किसानों को राजस्थान सेवा संघ का मार्गदर्शन प्राप्त था।
- किसानों ने राज्य की सरकार को अनियमित लाग, बेगार व भेंट आदि देना बंद कर दिया। आंदोलन का नेतृत्व 'राजस्थान सेवा संघ' के कर्मठ कार्यकर्ता 'नयनू राम शर्मा कर रहे थे। इनके नेतृत्व में डाबी नामक स्थान पर किसानों का एक सम्मेलन बुलाया।
- राज्य की ओर से बातचीत द्वारा किसानों की समस्याओं एवं शिकायतों को दूर करने के लिए कई प्रयास हुए, किन्तु वे विफल हो गए। तब राज्य की सरकार ने दमनात्मक नीति अपनाना शुरू किया और निहत्थे किसानों पर निर्ममतापूर्वक लाठियां व गोलियां बरसाई गई।
- सत्याग्रह करने वाली स्त्रियों पर घुड़सवारों द्वारा घोड़े दौड़ाकर एवं भाले चलाकर अमानवीय अत्याचार किया गया। पुलिस द्वारा किसानों पर की गई। गोलीबारी में झण्डा गीत गाते हुए 'नानकजी भील' शहीद हो गए।
- आंदोलनकारियों के नेता नयनू राम शर्मा, नारायण लाल, भंवरलाल आदि एवं राजस्थान सेवा संघ के अनेक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर मुकदमे चलाए गए। नयनू राम शर्मा को राजद्रोह के अपराध में 5 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी।
- यद्यपि यह आंदोलन असफल रहा किन्तु इस आंदोलन से यहाँ के किसानों को कुछ रियायतें अवश्य प्राप्त हुई और भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया गया तथा राज्य के प्रशासन में सुधारों का सूत्रपात हुआ।
- बूँदी का किसान आंदोलन राज्य प्रशासन के विरुद्ध था, जबकि मेवाड़ राज्य के बिजौलिया के आंदोलन में किसानों ने अधिकांशतः जागीर व्यवस्था का विरोध किया था। बूँदी के किसान आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

प्रश्न- निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है? [RAS. 2016]

कृषक आंदोलन	**नेता**
(1) बेगू	**- रामनारायण चौधरी**
(2) बूंदी	**- नयनूराम शर्मा**
(3) बिजोलिया	**- विजय सिंह पथिक**
(4) बीकानेर	**- नरोत्तम लाल जोशी**

Ans. 4

नीमूचाणा किसान आंदोलन 1923-24

- नीमूचाणा किसान आंदोलन - अलवर किसान आंदोलन 14 मई 1925 को गठित नीमूचाणा हत्याकाण्ड के लिए प्रसिद्ध है।
- 31 मई 1925 को नीमूचाणा हत्याकाण्ड तरुण राजस्थान समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ।
- नीमूचाणा हत्याकाण्ड को महात्मा गांधी ने दोहरी डायरशाही और जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से भी अधिक बुरा बताया था।
- अलवर में 80 प्रतिशत भूमि खालसा के अंतर्गत थी जबकि केवल 20 प्रतिशत भूमि जागीरदारों के नियंत्रण में थी।
- अलवर में अधिकांश किसानों को खालसा क्षेत्रों में स्थायी भू-राजस्व के अधिकार प्राप्त थे, जिन्हें 'बिश्वेदारों' के नाम से जाना जाता था। अलवर में भू-राजस्व की सबसे गलत पद्धति इजारा पद्धति लागू थी, जिसके तहत् ऊँची बोली बोलने वाले को निश्चित भूमि निश्चित अवधि के लिए दे दी जाती थी।
- 1876 ई. में ब्रिटिश पद्धति पर अलवर में पहला भूमि बंदोबस्त किया गया।
- नीमूचाणा किसान आंदोलन अलवर में हुआ नीमूचाणा गांव वर्तमान में अलवर जिले की बानसूर तहसील में है।

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "RPSC RAS (PRE.)" की परीक्षा_ में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे, जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 7014366728,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/ras-pre-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें →	https://wa.link/6r99q8

अध्याय- I
राजस्थान की वास्तु परम्परा

• मंदिर

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।
राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(I.) नागर या आर्य शैली-

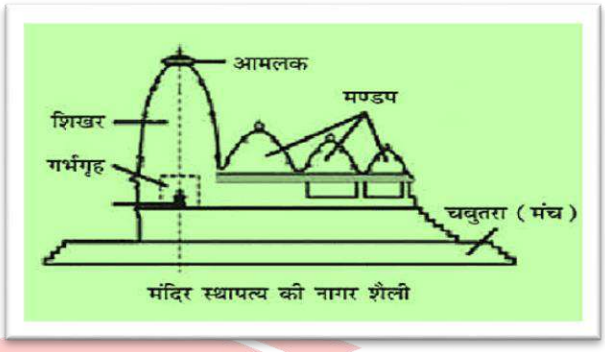

मंदिर स्थापत्य की नागर शैली

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओसिया के मंदिर (जोधपुर)।

(2.) भूमिज शैली

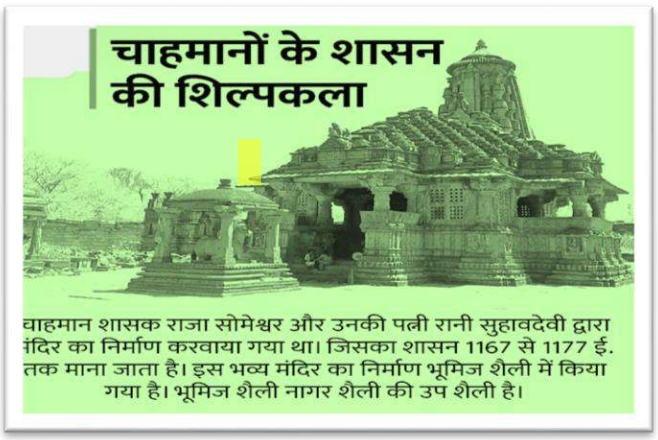

चाहमान शासक राजा सोमेश्वर और उनकी पत्नी रानी सुहावदेवी द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया था। जिसका शासन 1167 से 1177 ई. तक माना जाता है। इस भव्य मंदिर का निर्माण भूमिज शैली में किया गया है। भूमिज शैली नागर शैली की उप शैली है।

- यह नागर शैली के अंतर्गत आती है।
- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई., अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

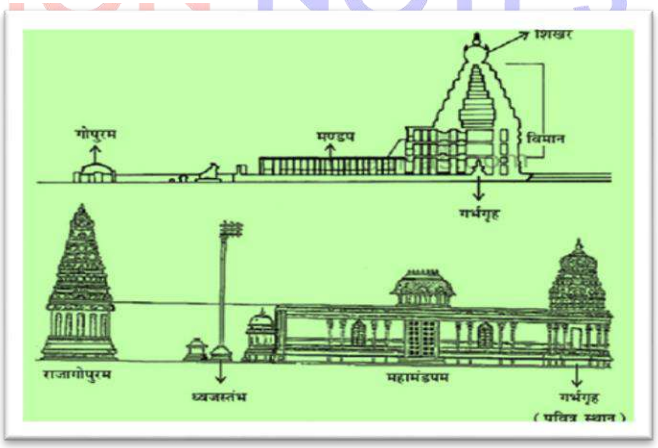

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
- द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।

- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़)।

(4.) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते हैं।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते हैं तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

❖ राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर, अजमेर) बैराठ (जयपुर)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओंसिया के मंदिर (जोधपुर) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर) , कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चितौड़गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया,जोधपुर)

1. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर - प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिए [RAS. 2016]
(1)आहड़ का आदिवराह मंदिर (2)आभानेरी का हर्षमाता का मंदिर
(3) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर (4) ओसियाँ का हरिहर मंदिर
कूट :
(a)1 , 2 , 3 और 4 (b)1 , 2 और 4
(c) 1 और 4 **(d)2 और 4**

❖ सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)

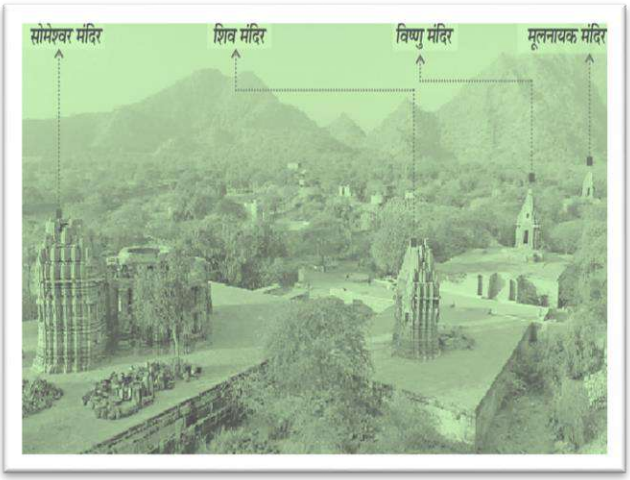

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।

- प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ल एकादशी व द्वादशी को यहाँ विशाल मेला भरता है।

❖ हर्षनाथ मंदिर(सीकर)

- इस मन्दिर का निर्माण 956 ई. चौहान शासक सिंहराज ने रखी थी। इसके बाद मंदिर का निर्माण चौहान राजा विग्रहराज द्वितीय ने कराया।
- यहाँ भगवान शिव का मन्दिर , भैरवजी का मन्दिर व हर्षनाथ का मन्दिर है।
- 1679 ई . में औरंगजेब के सेनापति खानजहाँ बहादुर ने इस मंदिर को तुड़वा दिया।
- 18वीं सदी में सीकर के रावराजा शिवसिंह ने यहाँ पुनः मंदिर का निर्माण करवाया।
- प्रतिवर्ष भाद्रपद त्रयोदशी को यहाँ विशाल मेला भरता है। हर्ष जीण माता के भाई थे।
- हर्ष मंदिर में लिंगोद्भव की मूर्ति भी प्रतिष्ठित की गई थी। जो विश्व की एकमात्र मूर्ति थी। जो अब अजमेर के संग्रहालय में स्थित है।

❖ कल्याणजी का मन्दिर (डिग्गी मालपुरा, टोंक)

- इस मंदिर का निर्माण मेवाड़ के तत्कालीन राणा संग्राम सिंह के शासन काल में संवत् 1584 (सन् 1527) के ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को तिवाड़ी ब्राह्मणों द्वारा हुआ था।
- यहाँ कुष्ठ रोग का इलाज होता है।
- मुस्लिम इसे कलह पीर के नाम से जानते है।
- यहाँ विष्णु की चतुर्भुज मूर्ति है।
- कल्याणजी के मंदिर में श्रावण पूर्णिमा के दिन पदयात्रियों का विशाल मेला भरता है। भाद्रपद शुक्ल एकादशी व वैशाख पूर्णिमा को भी डिग्गी में मेले का आयोजन होता है।
- कहा जाता है कि एक बार इंद्र के दरबार में रहने वाली उर्वशी नामक अप्सरा को जब इंद्र ने क्रोध में मत्युलोक में रहने को कहा तो उस समय राजा दिगवा व उर्वशी के मध्य प्रेम हो गया लेकिन उर्वशी ने अस्वीकार कर दियाऔर कहा कि वह भगवान इंद्र की अप्सरा हैं। इससे नाराज राजा ने भगवान इंद्र को ही युद्ध करने की चुनौती दे डाली। लेकिन उर्वशी ने कहा कि यदि वह पराजित हो गए तो वह राजा के साथ नहीं रहेगी अपितु उन्हें श्राप दे देगी।
- राजा इंद्र से युद्ध में परास्त हो गए और उर्वशी ने उन्हें कुष्ठ रोग होने का श्राप दे दिया। इसके बाद राजा भगवान विष्णु की शरण में पहुंचे। उन्होंने बताया कि राजा को कुछ समय के बाद समुद्र में उनकी मूर्ति मिलेगी, जिससे उनका उद्धार हो जाएगा। इसके बाद राजा ने उस मूर्ति की स्थापना कर दी।

❖ देलवाड़ा जैन मंदिर (माउंटआबू , सिरोही)

- यहाँ जैन धर्म के कुल 5 मंदिर (पाँच श्वेताम्बर और एक दिगम्बर जैन मन्दिर) है। जिनका निर्माण 11वीं 16वीं सदी के मध्य हुआ। जैन धर्म के ये पाँच मंदिर निम्न हैं- (i) विमलशाही / आदिनाथ मंदिर (ii) लूणवसही मंदिर (iii)

पित्तलहर जैन मंदिर (iv) पार्श्वनाथ जैन मंदिर (v)महावीर स्वामी जैन मंदिर

- 14 अक्टूबर, 2009 ई. में इन मंदिरों पर डाक टिकट जारी हुआ।

(i) विमलशाही / आदिनाथ मंदिर

- गुजरात के शासक भीमदेव चालुक्य के सेनापति विमलशाह द्वारा 1031 ई. में शिल्पकार कीर्तिधर की देखरेख में इस मन्दिर का निर्माण करवाया।
- विमलवसही जैन मंदिर के बारे में कर्नल जेम्स टॉड का कथन- भारत वर्ष के भवनों में ताजमहल के बाद यदि कोई भवन है तो वह है विमलवसही का मंदिर।

(ii) लूणवसही मंदिर

- गुजरात के शासक भीमदेव चालुक्य के के अमात्य वास्तुपाल व तेजपाल 1230 ई. शिल्पी शोमनदेव की देखरेख में इस मन्दिर का निर्माण करवाया।
- जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ की मूर्ति की स्थापना की स्थापना आचार्य श्री विजय सेन सूरि द्वारा गई गई।
- मन्दिर के मुख्य द्वार के दोनों ओर दो ताक हैं जिन्हें देवरानी- जेठानी के गवाक्ष कहते हैं। **(iii)पित्तलहर जैन मंदिर**
- इस मंदिर का निर्माण भीमाशाह करवाया था । जिस कारण इसे भीमाशाह मंदिर भी कहते हैं । इस मंदिर में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ / ऋषभदेव की 108 मन की पीतल की मूर्ति है। जिस कारण इन्हें पित्तलहर मंदिर कहते हैं।

(iv) पार्श्वनाथ जैन मंदिर

- यह तीन मंजिला मंदिर है जिसके गर्भगृह में जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित है। इस सिलावटों का मंदिर कहते हैं।

(v) महावीर स्वामी जैन मंदिर

24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का है।

❖ रसिया बालम और कुंवारी कन्या का मन्दिर (सिरोही)

- यह मंदिर 5 हजार साल से भी अधिक पुराना है। 1453 से 1468 तक महाराणा कुंभा यहाँ रुके थे। इस दौरान उन्होंने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था।
- कहा जाता है की रसिया बालम आबू पर्वत में मजदूरी करने आया था। कई उसे शिव का रूप भी मानते हैं और राजकुमारी को देवी का रूप।
- आबू की राजकुमारी को उससे प्रेम हो गया।
- राजा ने दोनों की शादी के लिए एक शर्त रखी की यदि एक रात में बिना किसी औजारों के यदि कोई झील खोद देगा तो अपनी बेटी की शादी वह उससे करा देगा।
- इस पर रसिया बालम ने एक ही रात में नक्की झील को खोद डाला और राजा के पास जाने लगा, लेकिन राजकुमारी की माँ नहीं चाहती थी की उसकी शादी उससे हो।
- ऐसी मान्यता है कि राजकुमारी की माँ ने रात में ही मुर्गे की आवाज निकाल दी और रसिया बालम को लगा कि वह शर्त हार गया है। जब वह अपने प्राण त्यागने लगा तो उसे राजकुमारी की माँ के षड्यंत्र के बारे में पता चला। इस पर उसके श्राप के बाद राजकुमारी की माँ और बाद में वह और राजकुमारी दोनों की पत्थर के बन गए।
- रसिया बालम की प्रेमकथा आज भी माउंट आबू पूरे मारवाड़-गोडवाड़ जिले में लोकगीतों में जिंदा है। रसिया बालम पर चरसियो आयो गढ़ आबू रे माय, देलवाड़ा आईने झाआड़ो गाढ़ियो रे, वठे करियो कारीगरी रो काम... स्थानीय भाषा में ये लोकगीत प्रसिद्ध हैं।
- रसिया बालम' और 'कुंवारी कन्या' की प्रेम गाथा का उल्लेख कई कवियों ने अपनी रचनाओं में किया है। जयशंकर प्रसाद के सन 1935 में आए कहानी संकलन 'छाया' में रसिया बालम की कहानी थी। इसके साथ ही डॉ. अरुण शर्मा के विश्व विख्यात 'प्रेम झील का अभिशाप' लिखा है।
- NOTE: - माना जाता है कि नक्की झील का निर्माण देवताओं ने अपने नाखूनों से खोदकर किया था।

❖ अर्बुदा देवी का मन्दिर (आबू, सिरोही)

- भारत में माता के 51 शक्तिपीठ हैं इन्ही शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ है अर्बुदा देवी मंदिर है।
- यहाँ माँ अर्बुदा देवी की पूजा माता कात्यायनी देवी के रुप में की जाती है।मान्यताओं के अनुसार इस स्थान पर माँ पार्वती के होंठ गिरे थे। तभी से यह स्थान अधर देवी के नाम से जाना जाता है।
- इसे राजस्थान की वैष्णो देवी कहते हैं।
- भगवान शिव का वरदान पाने वाले बासकली नामक दैत्य को माँ ने अपने चरणों के नीचे दबा कर उसका संहार कर दिया इसके बाद से अर्बुदा मंदिर के पास स्थित माता के पादुका की पूजा होने लगी।

❖ श्री नाथजी का मन्दिर (नाथद्वारा, राजसमन्द)

- श्री नाथजी को सात ध्वजा का स्वामी कहा जाता है।
- 1669 ई. में औरंगजेब के मन्दिर तोडो अभियान के समय मथुरा से पुजारी दामोदर दास व गोविन्द के नेतृत्व में श्रीनाथजी की मूर्ति को सिंहाड़ गाँव लाया गया जहाँ राणा राजसिंह ने इनका मन्दिर बनवाया जिस कारण सिंहाड़ का नाम नाथद्वारा हो गया।
- यह राजस्थान में वल्लभ / पुष्टिमार्ग की प्रधान पीठ है जहाँ भगवान कृष्ण की बालरुप में पूजा होती है।
- इस मन्दिर में दिन में 8 बार पूजा होती है।
- यहाँ स्थित मंदिर को हवेली कहते हैं तथा यहाँ गाये जाने वाले भजन को हवेली संगीत कहते हैं। श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे जो भगवान कृष्ण की लीलाओं के चित्र होते है उन्हें पिछवाईयाँ कहते हैं।

❖ त्रिनेत्र गणेश मन्दिर (रणथम्भौर, सवाईमाधोपुर)

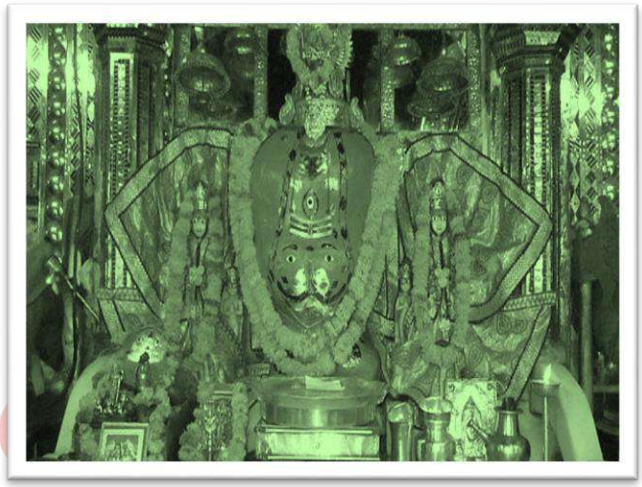

- यह मन्दिर रणथम्भौर दुर्ग में स्थित है जहाँ शादी का प्रथम कार्ड भेजा जाता है।
- भाद्रशुक्ल चतुर्थी को यहाँ विशाल मेला भरता है।
- 'गजवंदनम चितयम' नामक ग्रंथ में विनायक के तीसरे नेत्र का वर्णन किया गया है।
- मान्यता है कि भगवान शिव ने अपना तीसरा नेत्र उत्तराधिकारी के रूप में गणपति को सौंप दिया था और इस तरह महादेव की समस्त शक्तियां गजानन में निहित हो गईं और वे त्रिनेत्र बने।
- इस मन्दिर में गणेशजी के मुख की पूजा होती है जिस पर सिंदूर लगाया जाता है।
- गणेश मंदिर के पीछे प्राचीन शिव मंदिर बना है जिसके सामने हम्मीर देव चौहान ने अपना सिर काटकर चढ़ाया था।

❖ उषा मन्दिर (बयाना, भरतपुर)

- इस मन्दिर का निर्माण बाणासुर ने करवाया था।

A. अलवर
B. भरतपुर
C. करौली
D. राजसमंद (C)

10. राजस्थान का एकमात्र दुर्ग जो मुस्लिम दुर्ग निर्माण पद्धति में बना है?
A. शेरगढ़ का किला
B. मैंगनीज दुर्ग
C. चुरू का किला
D. जूनागढ़ (B)

- **प्रमुख महल**

❖ **अबलामीणी का महल**

- कोटा के रावमुकुन्द सिंह द्वारा मुकन्दरा की पहाड़ियों के शिखर पर इस महल का निर्माण करवाया गया।
- दर्रा वन्य जीव अभयारण्य में यह महल स्थित है।
- इसे राजस्थान का दूसरा, हाड़ौती या छोटा ताजमहल भी कहा जाता है।
- इस नाम से इसे उपमित करने वाले विदेशी इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड थे।

❖ **डीग के महल –भरतपुर**

- डीग महल का निर्माण महाराजा सूरजमल ने करवाया था।
- डीग महल बलुआ पत्थरों से निर्मित है।
- डीग का पुराना नाम ' दीर्घपुर ' था।
- डीग जलमहलों की नगरी के रूप में तथा फव्वारों के लिए भी प्रसिद्ध है।
- डीग भरतपुर रियासती शासकों की प्राचीन राजधानी रहा है ।
- यह महल चतुष्कोणीय आकृति का निर्माण करते है।

- डीग महल में गोपाल भवन सबसे बड़ा है। उसके दोनों तरफ सावन व भादों भवन बने हुये है।

❖ हवामहल – जयपुर

- हवामहल का निर्माण सवाई प्रताप सिंह द्वारा 1799 ई . में करवाया गया।
- प्रताप सिंह भगवान श्री कृष्ण के भक्त थे इसीलिए इसका निर्माण मुकुट के आकार में करवाया।
- हवामहल को उस्ताद लाल चंद कारीगर के द्वारा बनाया गया।
- हवामहल एक पाँच मंजिल की ईमारत है। हवामहल की पहली मंजिल ' शरद मंदिर ' , दूसरी मंजिल ' रत्न मंदिर ' , तीसरी मंजिल ' विचित्र मंदिर ' , चौथी मंजिल ' , ' प्रकाश मंदिर ' तथा पाँचवीं मंजिल ' हवा मंदिर ' के नाम से जानी जाती है।
- इसमें 365 जाली - झरोखे है।
- यह लगभग 88 फीट ऊँचा है।
- हवामहल का निर्माण बलुवा पत्थर तथा चूने से किया गया।

❖ राजमहल- उदयपुर

- इस महल का निर्माण महाराणा उदयसिंह ने करवाया।
- राजमहल पिछोला झील के तट पर स्थित है।
- इस महल को प्रसिद्ध इतिहासकार फर्ग्यूसन ने **राजस्थान के विण्डसर महल की** संज्ञा दी है।
- राजमहल के अन्दर ही महाराणा प्रताप का वह ऐतिहासिक भाला रखा गया जिससे हल्दी घाटी के युद्ध में आमेर के मानसिंह पर प्रताप ने वार किया था।

❖ एक जैसे नौ महल- जयपुर

- नाहरगढ़ दुर्ग में स्थित इन महलों का निर्माण महाराजा माधोसिंह द्वितीय ने अपने नौ पासवानों के नाम पर करवाया।
- माधोसिंह के नौ रत्न - सूरजप्रकाश, खुश प्रकाश, जवाहर प्रकाश, ललित प्रकाश, लक्ष्मी प्रकाश, आनन्द प्रकाश, चन्द्रप्रकाश, रत्न प्रकाश, वसन्त प्रकाश

❖ खेतड़ी महल- झुंझुनूं

- खेतड़ी महल को ' राजस्थान का दूसरा हवामहल ' कहा जाता है।
- खेतड़ी महल का निर्माण राजा भोपालसिंह ने सन् 1760 में ग्रीष्म ऋतु में विश्राम के लिए किया था।
- खेतड़ी महल सात मंजिली कटोरेनुमा बुर्ज है ।
- खेतड़ी महल को शेखावटी का हवामहल कहा जाता है।

❖ उम्मेदभवन पैलेस- जोधपुर

- इसका शिलान्यास 1929-1942 को महाराजा उम्मेदसिंह द्वारा किया गया।
- उम्मेद भवन पैलेस एशिया के भव्य प्रसादों में से एक है।

➢ चन्द्रमहल के पास जयनिवास उद्यान बना हुआ है ।

राजस्थान के प्रमुख महल, हवेलियों व छतरियां

1. सावन – भादो महल किस जिले में स्थित है?

A. अलवर
B. भरतपुर
C. धौलपुर
D. करौली **(B)**

2. किस महल को इतिहासकार फर्ग्यूसन द्वारा राजस्थान के बिण्डसर महल की संज्ञा दी गई थी?

A. हवामहल
B. बादल महल
C. राज़ महल, उदयपुर
D. अबला मीणी का महल **(C)**

3. निम्न में से कौन सी मंजिल हवामहल में स्थित 5 मंजिलों में शामिल नहीं है?

A. शरद
B. रत्न
C. विचित्र
D. सुख निवास
E. प्रकाश **(C)**

5. राजस्थान का ताजमहल किस महल को कहा जाता है?

A. हवा महल
B. जल महल
C. अबला मीणी का महल
D. जसवंतथड़ा महल **(D)**

6. उदयपुर के किस महल को उदयपुर का मुकुटमणि महल कहते हैं ?

A. जगमंदिर पैलेस
B. जगनिवास महल
C. राजमहल
D. सज्जनगढ़ महल **(D)**

7. निम्न में से किस महल में लखनऊ के भूल – भूलैया महल एंव जयपुर के हवा महल की झलक देखने को मिलती है?

A. अबला मीणी का महल
B. जसवंतथड़ा महल
C. अभेडा महल
D. खेतड़ी महल **(D)**

8. राजस्थान के किस महल में राम और रावण के युद्ध का चित्रण किया गया है ?

A. अभेडा महल
B.चोखेलाव महल
C. लालगढ़ महल
D. बनेडा महल **(D)**

राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ

❖ जब भी किसी राजा, रानी या प्रतिष्ठित महिला-पुरुष की मौत हो जाती थी तो उसकी याद अमर रखने के लिए छतरी और देवल आदि बना दिए जाते थे। इसके पीछे धारणा यह रही है कि उसके व्यक्तित्व, कृतित्व और स्मृति का संदेश आम आदमी तक पहुंचे।

प्रमुख राजवंशो की छत्तरियाँ

❖ **गैटोर की छत्तरियाँ**

➢ यहाँ पर जयपुर के शासकों की छत्तरियाँ हैं।
➢ सवाई जयसिंह से लेकर माधोसिंह द्वितीय तक।
➢ ईश्वरी सिंह की छतरी यहाँ स्थित नहीं है, ईश्वरी सिंह की छत्तरी 'ईसरलाट' के पास ही है।
➢ इन छतरियों में सवाई जयसिह की छतरी सबसे सुन्दर है। जिसकी एक प्रतिलिपी लंदन के केनसिंगल म्यूजियम में रखी गई है ।

❖ **आहड़ की छत्तरियाँ**

एकांत में निवास

- किशनगढ़ के शासक सावंत सिंह की प्रेमिका रसिक प्रिया थी । ऐरिक डिक्सन ने इस चित्र को भारत की मोनालिसा कहा गया था।
- भारत सरकार ने 5 मई , 1973 को बणी - ठणी पर 20 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया था।
- इस शैली में नारी की आकृति कमल एवं खंजन सी काली आँखे, चाप के समान लंबी भृकुटि, लंबी व सुराहीदार गर्दन, दीर्घनाक, लंबे बाल, लम्बी नायिकाएँ, लँहगा, चोली एवं पारदर्शी आँचल से सज्जित वेसरि (नाक का आभूषण) अनोखा व प्रमुख आभूषण आदि को दर्शाया गया हैं ।

❖ **अजमेर उपशैली**

- इस शैली के प्रमुख चित्रकार जूनियाँ का चाँद , सावर का तैय्यब , नाँद का रामसिंह भाटी , जालजी एवं नारायण भाटी खरवा से , मसूदा से माधोजी एवं राम तथा अजमेर के अल्लाबक्स , (उस्ता और साहिबा स्त्री चित्रकार) हैं।
- इस शैली में लाल, पीले हरे, नीले के साथ बैंगनी रंग का विशेष प्रयोग हुआ हैं।
- इस शैली के पुरुषों आकृति लंबे एवं वीरोचित गुणों से युक्त पुरुष, गोल आँखे, लंबी जुल्फें, बाँकी एवं छल्लेदार मूंछे।
- इस शैली में नारी आकृति आकर्षक व कोमलांगी महिलाएँ, लंबे घने एवं काले बाल, पैनी अंगुलियाँ, लहंगा, बसेड़ा एवं आकर्षक आभूषण चित्रित किया गया हैं।
- जूनियाँ के चाँद द्वारा अंकित राजा पाबूजी का सन् 1698 का निर्मित व्यक्ति - चित्र इस शैली के अंकित चित्रों में सुन्दरतम चित्र हैं।

❖ **जैसलमेर उपशैली**

- जैसलमेर शैली का विकास मुख्य रूप से महारावल हरराज , अखैसिंह एवं मूलराज के संरक्षण में हुआ।
- इस शैली का स्वर्णकाल अखैसिंह व मूलराज द्वितीय के शासन काल को मानते हैं।
- जैसलमेर एकमात्र शैली हैं जो स्वतन्त्र हैं अर्थात इस शैली पर किसी अन्य शैली का प्रभाव नहीं आया हैं।
- जैसलमेर शैली का प्रमुख चित्र 'मूमल' हैं।

❖ **नागौर उपशैली**

- इस चित्रशैली का प्रारंभ 18वीं सदी में हुआ था।
- इस चित्रशैली में बुझे हुए व हल्के रंगों का प्रयोग हुआ हैं।
- इस चित्रशैली में पारदर्शी वेशभूषा, वृद्ध व्यक्ति के चेहरे पर जुहरिया, सफेद मूछें , छोटी आँखों , का चित्रण हुआ हैं।

❖ **ढूँढाड़ शैली**

- यह शैली राजस्थान में सर्वाधिक मुगल प्रभाव वाली शैली हैं।
- यह चित्रशैली आदमकद चित्र व भित्ति चित्रण का प्रयोग सर्वाधिक हुआ हैं।

❖ **जयपुर उपशैली**

- यह चित्रशैली सवाई जयसिंह के समय प्रारम्भ हुई।
- सवाई जयसिंह विभिन्न कलाओं को संरक्षण देने के लिए **छत्तीस कारखानों** की स्थापना की जिसमें चित्रकारों के चित्र निर्माण के लिए आमेर **में 'सुरतखाना'** बनवाया था।
- जयसिंह के दरबारी चित्रकारों में मोहम्मद शाह, साहिबराम व शिवदास राय थे।
- इसी समय शिवदास राय ने ब्रज भाषा में तैयार करवाई गई सचित्र पाडुलिपि 'सरस रस ग्रंथ' (1737 ई.) है जिसमें कृष्ण विषयक के 39 चित्र अंकित हैं।
- साहिबराम ने बड़े व्यक्ति चित्र पोट्रेट (आदमकद) बनाकर चित्रकला में नयी परम्परा डाली।
- लालचन्द ने जानवरों की लड़ाइयों के अनेक चित्र बनाये।
- महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह के समय चित्र सृजन का केन्द्र (सूरतखाना) आमेर से हट कर जयपुर आ गया। सवाई ईश्वरीसिंह के समय सांगानेर में हाथों द्वारा निर्मित कागजों पर चित्रकारी की शुरुआत हुई।
- महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम के समय कलाकारों ने चित्रण के स्थान पर रंगों को न भरकर मोती, लाख तथा लकड़ी की मणियों को चिपकाकर रीतिकालीन अलंकारिक मणिकुट्टिम प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।
- लाल चितेरा महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह तथा महाराजा सवाई माधोसिंह के समय का एक प्रमुख चित्रकार था । वह बड़े आकार में शिकार व जंगली जानवरों की लड़ाइयों के चित्रण में निपुण था ।
- सवाई प्रताप सिंह का समय इस चित्रशैली का स्वर्णकाल था।
- इस शैली के प्रमुख चित्रकार साहिबराम, मोहम्मद शाह, सालिगराम, रामजीदास, रघुनाथ, लालचंद, गंगाबख्श थे।

❖ **अलवर उपशैली**

वैश्या (गणिका)

कामशास्त्र

हाथीदांत

- यह चित्रशैली की शुरुआत प्रतापसिंह के समय हुई
- विनयसिंह का का काल इस चित्रशैली का स्वर्ण कहलाता है।
- प्रताप सिंह के समय डालूराम नामक चित्रकार जयपुर से अलवर आया तथा राजगढ़ किले के शीश महल में भित्ति चित्रण किया।

- विनयसिंह के काल में संत शेख सादी की पुस्तक गुलिस्तां की पांडुलिपी को भारतीय फारसी शैली में गुलाम अली ने चित्रांकित किया था।
- प्रताप सिंह के पुत्र बख्तावर सिंह के समय बलदेव ने मुगल शैली में तथा डालूराम ने राजपूत शैली में सर्वाधिक चित्र बनाये।
- इस चित्रशैली पर ईरान, मुगल, यूरोपियन, दिल्ली व जयपुर चित्रशैली का प्रभाव पड़ा।
- अलवर चित्रशैली की सर्वप्रमुख विशेषता किनारे पर सुन्दर बेल बूटों का चित्रांकन है।
- मूलचन्द ने हाथीदांत पर चित्र बनाये ।
- शिवदान सिंह के समय कामशास्त्र पर चित्र बने।
- यह एकमात्र चित्रशैली है जिसमें वैश्या (गणिका) के चित्र हैं।
- बुद्धराम , डालचन्द , मंगलसेन , नानक राम , बुद्ध राम, छोटेलाल, नन्दराम जमनादास , गुलाबअली, बलदेव व मूलचन्द अलवर चित्रशैली के प्रमुख चित्रकार थे।

जमनादास , छोटेलाल , बक्साराम व नन्दलाल चित्रकला की किस शैली से सम्बध्द हैं? (RAS 2015)
(a) मारवाड़ शैली (b) झालावाड़ शैली
(c) अलवर शैली (d) बीकानेर शैली

❖ आमेर उपशैली

हाथियों की लड़ाई

नवरस

- यह चित्रशैली मानसिंह प्रथम के समय प्रारम्भ हुई।
- आमेर शैली के प्रारंभिक काल के चित्रित ग्रंथों में ' यशोधरा चरित्र ' (1591ई.) नामक ग्रंथ आमेर में चित्रित हुआ।
- 1588 ई . में आमेर सूरतखाने में रज्मनामा का चित्रण हुआ जिसमें 169 चित्र थे।
- सन् 1606 ई . में निर्मित ' आदिपुराण ' भी आमेर शैली की चित्रकला का तिथियुक्त क्रमिक विकास को इंगित करती है इसकी रचना पुष्पदत्त ने की थी।
- मिर्जा राजा जयसिंह के समय इस चित्रशैली का सर्वाधिक विकास हुआ जिसमें बिहारी सतसई से संबंधित सर्वाधिक चित्र हैं।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने 1639 ई . में कृष्ण-रूकमणी वेली तथा रसिकप्रिया ग्रंथों का चित्रांकन करवाया।
- हैं।
- इस चित्रशैली में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग, पशु - पक्षिओं की लड़ाइयाँ , हाथियों की लड़ाइयाँ , रागमाला , नवरस , बारहमासा , कविप्रिया , गीत गोविन्द , रसिक प्रिया , कामसूत्र के चित्र व सफेदा वृक्ष का चित्रण हुआ है।
- इस शैली के प्रमुख चित्रकार' हुकुमचंद, मन्नालाल, पुष्पदत्त, मुरली थे।

❖ उणियारा उपशैली

- रावराजा सरदार सिंह (1740-1777 ई.) कला प्रेमी थे, जिन्होंने उनियारा में सुंदर महल भी बनवाए तथा धीमा, मीरबक्श, काशी, रामलखन, भीम आदि प्रमुख कलाकारों को आश्रय प्रदान किया।
- अनके पोथी चित्रों तथा लघु चित्रों के माध्यम से भी उनियारा शैली का ज्ञान होता है।

- **राजस्थान के प्रमुख नृत्य**

➢ **शास्त्रीय नृत्य**

- राजस्थान का एकमात्र शास्त्रीय नृत्य ' कथक ' हैं ।
- कथक नृत्य के प्रवर्तक भानुजी को माना जाता हैं।
- जयपुर घराना कथक नृत्य का आदिम घराना हैं।
- वर्तमान में कथक नृत्य उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य हैं कथक नृत्य के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार बिरजू महाराज हैं।
- अन्य कलाकार प्रेरणा श्रीमाली , उदयशंकर ।

➢ **लोकनृत्य**

- लोकनृत्य वह कला हैं, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त करना एवं आनंद व उमंग से भरकर सामूहिक रूप से किए जाने वाले नृत्य ही लोकनृत्य कहलाते हैं।

➢ राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया हैं ।

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **जातीय नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

❖ **राजस्थान के क्षेत्रीय लोकनृत्य**

➢ **घूमर**

- ' घूमर ' शब्द की उत्पत्ति ' घुम्म ' से हुई हैं , जिसका अर्थ होता हैं , ' लहंगे का घेर ' ।
- घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर ' घूमर लोकगीत ' की धुन पर नाचती हैं ।
- घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती हैं , जिसे सवाई कहते हैं ।
- घूमर नृत्य की उत्पति मध्य एशिया के भरंग नृत्य से मानी जाती हैं ।
- यह राजस्थान का राजकीय नृत्य हैं ।
- यह नृत्य मारवाड़ व मेवाड़ में राजघराने की महिलाओं द्वारा गणगौर पर किया जाता हैं ।
- राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका ' घुमर ' नृत्य राजस्थान के ' लोकनृत्यों की आत्मा ' कहलाता हैं।
- इसे सिरमौर नृत्य व नृत्यों की आत्मा सामंतशाही नृत्य , रजवाड़ी नृत्य , महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य कहते हैं ।
- यह गरबा नृत्य की तरह किया जाता हैं ।
- घूमर- साधारण स्त्रियों द्वारा किया जाता हैं।
- झूमरिया- यह बालिकाओं द्वारा किया जाता हैं।

➢ **झूमर नृत्य**

- हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौंहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता हैं।

➢ **घुमरा नृत्य**

- इसे भील जनजाति की महिला करती हैं।
- यह गरबा जैसा होता हैं।
- यह मांगलिक अवसर पर किया जाता हैं ।
- यह अर्द्ध वृताकार घेरे में महिलायें करती हैं ।
- इस नृत्य में 2 दल होते हैं जिसमें एक दल गाता हैं तथा दूसरा नाचता हैं।

➢ **घूमर-घूमरा नृत्य**

- घूमर - घूमरा नृत्य राजस्थान का एकमात्र शोक सूचक नृत्य हैं।
- जो केवल वागड़ क्षेत्र के कुछ ब्राह्मण समुदाय में किया जाता हैं ।

➢ **ढोल नृत्य**

- राजस्थान के जालौर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं।
- इस नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को जाता है।
- यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं।
- ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।

➢ घुड़ला नृत्य

- घुड़ला नृत्य विशेष रूप से जोधपुर जिले में किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य युवतियों के द्वारा किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य में स्त्रियाँ सुंदर शृंगार करके गोलाकार पथ पर नृत्य करती है ।
- घुड़ला नृत्य करते समय महिलाओं के सिर पर छिद्रित मटके रखे होते है । जिनमें जलता हुआ दीपक रखा जाता है । इस मटके को ही घुड़ला कहते हैं ।
- शीतला अष्टमी (चैत्र कृष्णा -8) पर घुडले का त्यौहार मनाया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य को सर्वप्रथम मारवाड़ में घुड़ले खाँ की बेटी गिंदोली ने गणगौर उत्सव के समय शुरू किया था ।
- यह नृत्य दिन में नहीं अपितु रात्रि में किया जाता है ।
- इसमें चाल मंद व मादक होती है व घुड़ले को नाजुकता से संभाला जाता है , जो दर्शनीय है ।

- **घुड़ला नृत्य से एक कथा जुड़ी हुई है-** एक बार मारवाड़ के पीपाड़ा नामक स्थान पर स्त्रियाँ तालाब पर गौरी पूजन कर रही थी तभी अजमेर का सूबेदार मल्लू खाँ 140 कन्याओं का हरण करके ले जाता है । जोधपुर नरेश सातल देव ने इनका पीछा किया । इनका भयंकर युद्ध हुआ , जिसमें मल्लू खाँ के सेनापति घुडले का सिर छिद्रित कर सातल देव द्वारा लाया गया तब से यह नृत्य किया जाता है ।

➢ डांडिया नृत्य

- यह मारवाड़ का प्रतिनिधि नृत्य है, जिसमें 10 – 15 पुरुष विभिन्न प्रकार की वेशभूषा में स्वांग भरकर गोले में डंडियों को आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं।
- यह मूलत : गुजरात का है।
- राजस्थान में यह मारवाड़ का प्रसिद्ध है।
- यह होली के बाद खेलते हैं।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य है इसमें शहनाई व नगाड़ा मुख्य वाद्य होता है।
- इस नृत्य में बड़ली के भैरुजी का गुणगान किया जाता है।
- इस नृत्य में धमाल गीत गाये जाते हैं।

➢ झाँझी नृत्य

- झाँझी नृत्य मारवाड़ क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा किया जाता है ।
- झाँझी नृत्य के अन्तर्गत छोटे मटकों मे छिद्र करके महिलाएं समूह में उनको धारण करके यह नृत्य करती है।

➢ लुम्बर नृत्य

- यह नृत्य स्त्रियों द्वारा होली पर किया जाता है ।

इग्लैण्ड व जर्मनी) में भी मंचित किया जा चुका है ।

तलवार की धार पर नाचना , काँच के टुकड़ों पर नाचना , जमीन से मुँह द्वारा रूमाल उठाना किस नृत्य की विशेषता (RAS Pre 2016)

(a) इंडाणी (b) शंकरिया

(c) भवाई (d) पणिहारी तेरहताली

राजस्थान में भवाई नृत्य के जन्मदाता थे?

[RAS - 99]

(a) अली बक्शी (b) लच्छीराम

(c) बाघाजी (d) गोपाल

➢ तेरहताली

- इस नृत्य का उद्गम स्थल पाली जिले का पादरला गाँव माना जाता है।
- इस नृत्य का उद्गम स्थल पाली जिले का पादरला गाँव माना जाता है।
- पाली, नागौर एवं जैसलमेर जिले की कामड़ जाति की विवाहित महिलाओं द्वारा (बैठकर किया जाता है) रामदेवजी के मेले में किया जाता है।
- जिसमें नृत्यांगना दायें पाँव पर नौ एवं प्रत्येक हाथ की कोहनी के एक-एक मंजीरे बाँधकर तथा दो मंजीरे हाथों में रखकर कुल तेरह मंजीरे परस्पर टकराते हुए विविध ध्वनियाँ उत्पन्न करती हैं। जिस कारण इसे तेरहताली नृत्य कहते हैं ।
- तेरहताली नृत्य में अनाज साफ करना , आटा गूँदना , अनाज पीसना , अनाज कूटना , घी निकालना , अनाज काटना , आटा छानना , सूत कातना , रोटी बनाना आदि कलाऐं दिखाई जाती है ।
- इस नृत्य में शरीर की लचकता , थाली में जलता दीपक रखकर महिला थाली को सिर पर रखती है , मुँह में तलवार लेकर नृत्य करती है ।
- यह नृत्य पहले हींगलाज माता के मन्दिर में किया जाता था ।
- इस नृत्य में पुरुष तम्बूरा, ढोलक इत्यादि वाद्य यंत्र बजाते हैं।
- कामड़ जाति की विवाहित महिलाएं ही इस नृत्य को कर सकती हैं।
- माँगी बाई, मोहनी व नारायणी इसकी प्रसिद्ध कलाकार हैं।
- कमलदास , परमदास , मोहिनी लक्ष्मणदास कामड़ , नारायणी ने इस नृत्य को प्रसिद्ध किया ।

➢ कच्छी घोड़ी

- शेखावाटी क्षेत्र एवं नागौर जिले के पूर्वी भाग में अधिक प्रचलित हैं।
- इस नृत्य में झांझ , ढोल , बांकिया व थाली वाद्य बजाये जाते हैं।
- नृत्य के साथ रसाला, रंगभरिया, बींद एवं लसकरिया गीत गाए जाते हैं।
- यह नृत्य सरगड़ा जातियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों पर किया जाता है।
- यह वीर नृत्य है , जिसमें तलवारों से नकली लड़ाई की जाती है ।
- यह व्यावसायिक पुरुष प्रधान नृत्य है ।

- किशनगढ़ की फलकूबाई चरी नृत्य की लोकप्रिय कलाकार हैं ।
- वर्तमान में श्रीमोहन सिंह गौड़ व कुमारी सुनीता रावत इसके प्रमुख कलाकार हैं ।

❖ **मेवों के नृत्य**

➢ **रणबाजा**

- एक प्रकार का मांगलिक युगल नृत्य हैं ।

➢ **रतवई**

- मेव स्त्रियों द्वारा सिर पर इण्डोणी एवं खारी रखकर, चूड़ियाँ खनकाते हुए किया जाने वाला लोकनृत्य है, जिसमें पुरुष अलगोजा एवं टामक बजाते हैं।

❖ **बालदिया भाटों के नृत्य**

➢ **बालदिया नृत्य**

- राज्य की घूमन्तु व्यापारिक जाति बालदिया भाटों द्वारा गेरू के रंग का उपयोग कर लयात्मक नृत्य किया जाता हैं।

❖ **कालबेलिया जाति के नृत्य**

➢ **कालबेलिया नृत्य**

- इसे सपेरा नृत्य भी कहते हैं ।
- इस नृत्य को प्रसिद्ध गुलाबो ने किया ।
- यह एकमात्र नृत्य है जिसे 2010 में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक सूची में शामिल किया गया ।

➢ **इंडोणी नृत्य**

- इंडोणी नृत्य स्त्री - पुरुष दोनों मिलकर करते हैं ।
- इंडोणी नृत्य गोलाकार पथ पर पुंगी , खंजरी वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है ।
- इंडोणी घड़े व सिर के बीच रखी जाने वाली एक गोलाकार वस्तु होती है ।

➢ **पणिहारी नृत्य**

- पणिहारी नृत्य पणिहारी गीत पर आधारित एक युगल नृत्य है ।
- पणिहारी नृत्य के प्रमुख वाद्य ढोलक , बाँसुरी हैं ।
- इसमें पनिहारिन स्त्रियाँ अपने सिर पर 5-7 मटके रखकर नृत्य करती हैं ।

➢ **शंकरिया नृत्य**

- यह प्रेम कथा पर आधारित स्त्री - पुरुषों का नृत्य हैं ।
- इस नृत्य में अंग संचालन बहुत सुन्दर होता हैं ।
- इस नृत्य की प्रमुख नृत्यांगना कंचन सपेरा , गुलाबो , कमली एवं राजकी हैं ।

➢ **बागड़िया नृत्य**

- कालबेलिया महिलाओं द्वारा यह नृत्य भीख माँगते समय किया जाता हैं ।
- बागड़िया नृत्य में मुख्य वाद्य यंत्र चंग होता हैं ।

राजस्थान का शंकरिया नृत्य किससे संबंधित है ? (RAS -2016)

(a) तेरहताली (b) सहरिया
(c) भील **(d) कालबेलिया**

गरासिया जनजाति से संबंधित नृत्य शैली है(RAS -2018)

(a) गवरी **(b) लूर**
(c) बम (d) तेरहताली

❖ **बणजारा जाति के नृत्य**

➢ **मछली नृत्य**

- मछली नृत्य एक नृत्य नाटक एवं धार्मिक नृत्य हैं , जो हर्षोल्लास से शुरू होता हैं , लेकिन दुःख के साथ समाप्त होता हैं ।
- मछली नृत्य बाड़मेर का प्रसिद्ध हैं, क्योंकि सर्वाधिक बणजारा जाति बाड़मेर में रहती हैं ।

❖ **माली समाज का नृत्य**

➢ **चरवा नृत्य**

- माली समाज की स्त्रियों के द्वारा किसी स्त्री के संतान होने पर कांसे के घड़े में दीपक रखकर उसे सिर पर धारण कर चरवा नृत्य किया जाता हैं ।
- सामान्यतः कांसे के घड़े चरवा के कारण ही इसका यह नाम पड़ा ।

के बाद इनको गौसेवा संघ की अध्यक्ष बनाया गया। ये जयपुर प्रजामण्डल के 1944 ई. के अधिवेशन की अध्यक्ष चुनी गई। विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के दौरान 108 कुओं का निर्माण करवाया। 1956 ई. में सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

नारायणी देवी वर्मा

नारायणी देवी का जन्म मध्य प्रदेश के सिंगोली कस्बे में हुआ था । इनके पिता रामसहाय भटनागर थे | इनका विवाह श्री माणिक्यलाल वर्मा से हुआ। बिजौलिया किसान आंदोलन के समय इन्हें कुम्भलगढ़ के किले में बन्दी बना लिया गया। नवम्बर 1944 ई. में महिला शिक्षा तथा जागृति के लिए भीलवाड़ा में महिला आश्रम नाम की संस्था स्थापित कर महिलाओं के सर्वांगीण विकास का कार्य अपने हाथ में लिया। 1952-53 में माणिक्य लाल वर्मा के साथ मिलकर आदिवासी कन्या छात्रावास की स्थापना की | 1970 में राज्यसभा से निर्वाचित किया गया।

शांता त्रिवेदी

शांता देवी का जन्म नागपुर (महाराष्ट्र) में हुआ था। इनका विवाह उदयपुर के परसराम त्रिवेदी के साथ हुआ। शांता त्रिवेदी ने 1947 ई. में उदयपुर में राजस्थान महिला परिषद की स्थापना की ताकि महिलाओं का समुचित विकास हो सके | और यह उदयपुर नगर परिषद और नगर निगम की निर्वाचित सदस्य रही|

मिस लुटर

मिस लूटर का पूरा नाम लिलियन गोडाफ्रेडा डामीथ्रोन लूटर था। इनका जन्म क्यामो, बर्मा में हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ये भारत आ गयी। उन्हीं दिनों जयपुर की महारानी गायत्री देवी ने राजपूत घराने की लड़कियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल शुरू किया। मिस लूटर को 1934 ई. में महारानी गायत्री देवी को स्कूल में प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया। वे जीवन पर्यन्त इस पद पर रही। महिला जगत में शिक्षा के प्रसार के लिए भारत सरकार ने 1970 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। 1976 ई. में ब्रिटिश सरकार ने भी महिला शिक्षा के लिए सम्मानित किया ।

कालीबाई

डूंगरपुर जिले के रास्तापाल गांव की भील कन्या कालीबाई अपने शिक्षक सेंगाभाई को बचाने के प्रयास में पुलिस द्वारा गोलियों से छलनी कर दी गई। इनकी मृत्यु 20 जून, 1947 हुई। रास्तापाल में इनकी स्मृति में एक स्मारक बना हुआ है।

किशोरी देवी

महिलाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार करने वालों के विरोध में सीकर जिले के कटराथल नामक स्थान पर किशोरी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल महिला सम्मेलन 1934 ई. में आयोजित किया गया। जिसमें क्षेत्र की लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया। किशोरी देवी स्वतंत्रता सेनानी सरदार हरलाल सिंह खर्रा की पत्नी थी।

श्रीमती सत्यभामा

बूंदी के स्वतंत्रता सेनानी नित्यानन्द नागर की पुत्रवधू सत्यभामा ने ब्यावर अजमेर आंदोलन (1932 ई) का नेतृत्व किया। सत्यभामा को गांधी जी की मानस पुत्री के रूप में भी जाना जाता है।

कमला देवी

इनको राजस्थान की प्रथम महिला पत्रकार के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अजमेर से प्रकाशित होने वाले प्रकाश पत्र से लेखन कार्य किया।

खेतूबाई

बीकानेर के स्वतंत्रता सेनानी वैद्य मधाराम की बहन जिन्होंने दूधवा खारा (चुरू)किसान आंदोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया और आजीवन खादी धारण करने का प्रण लिया।

रमा देवी

इनका जन्म जयपुर में गंगासहाय के घर में हुआ। ये मात्र 11 वर्ष की आयु में विधवा हो गई। बाद में गांधी विचारधारा रखने वाले नेता तादूराम जोशी से पुनर्विवाह हुआ। विवाह के बाद इन्होंने खादी पहनना प्रारम्भ किया तथा नौकरी छोड़ पति के साथ राजस्थान सेवा संघ का कार्य किया। 1931 ई. में बिजौलिया किसान आंदोलन में भाग लिया और इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तथा 1930 के सत्याग्रह और 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और जेल गयीं |

प्रश्न - उस क्रांतिकारी महिला का नाम बताइए जिसने बिजौलिया किसान आंदोलन में भाग लिया और इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तथा 1930 के सत्याग्रह और 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और जेल गयीं।

1) रतन शास्त्री
2) किशोरी देवी
3) रमा देवी
4) अंजना देवी चौधरी (RAS Pre. 2021)

लक्ष्मीदेवी आचार्य

कलकत्ता में स्थापित बीकानेर प्रजामण्डल की संस्थापक सदस्या और अध्यक्ष भी रही। सविनय अवज्ञा आंदोलन और स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया।

पन्नाधाय

पन्नाधाय मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह की धाय मां थी। मेवाड़ के सामन्त बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर युवराज उदयसिंह की हत्या का भी प्रयास किया। पन्नधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह को किले से बाहर भेजकर उसकी प्राण रक्षा की।

गोरां धाय

गोरां धाय ने जोधपुर के अजीतसिंह को औरंगजेब से बचाने के लिए अपने पुत्र का बलिदान देने के कारण इन्हें मारवाड़ की पन्ना धाय भी कहा जाता है।

हाड़ी रानी (सहल कंवर)

सलूम्बर (मेवाड़) के जागीरदार रतनसिंह चूंडावत की पत्नी जिसने अपना सिर काटकर निशानी के रूप में युद्ध में जाते हुए पति को दे दिया था।

रानी पद्मिनी

रानी पद्मिनी चित्तौड़ की रानी थी, जिन्हें पद्मावति के नाम से जाना जाता है जिनके पति रतन सिंह थे। इनकी साहस और बलिदान की गौरवगाथा की मिसाल आज भी राजस्थान में दी जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जब खिलजी वंश का क्रूर शासक अलाउद्दीन खिलजी रानी पद्मावति को पाने के लिए चित्तौड़ के किले को घेर लिया था, तब रानी ने आग में कूदकर अपने प्राण की आहुति दे दी। लेकिन अपने सतीत्व पर आँच नहीं आने दिया।

मीरा बाई

मीरा बाई जन्म 1498 में राजस्थान के पाली स्थित कुड़की गांव में हुआ था। इनका नाम कृष्ण भक्ति शाखा की अहम कवयित्रियों में लिया जाता है। ये सोलहवीं शताब्दी की विश्व चर्चित हिन्दू कवयित्री थी तो वहीं इन्हें कृष्ण का परम भक्त के नाम से भी जाना जाता है।

डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण परिवार में जन्मी कृष्ण भक्त कवयित्री गवरी बाई को वागड़ की मीरा भी कहा जाता है। डूंगरपुर के महारावल शिवसिंह ने गवरीबाई के लिए 1829 ई. में बालमुकुंद मंदिर का निर्माण करवाया।

अल्लाह जिलाई बाई

केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देस ..... गीत प्रख्यात मांड गायिका अल्लाह जिलाई बाई द्वारा गाया गया है। इनका जन्म 1 फरवरी 1902 ई. को बीकानेर में हुआ मांड गायिकी में विशिष्ट योगदान के लिए सन् 1982 में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। बाईजी को सन् 1943 में रॉयल अल्बर्ट हॉल में बी. बी. सी लंदन द्वारा कोर्ट सिंगर अवार्ड दिया गया।

गवरी देवी

गवरी देवी का जन्म 1920 ई. में जोधपुर में हुआ। मास्को में आयोजित भारत महोत्सव में गवरी देवी ने मांड गायिकी से श्रोताओं को सम्मोहित कर प्रदेश का नाम रोशन किया।

कालबेलिया नर्तकी गुलाबो

इनका जन्म 1960 में घुमंतू कालबेलिया समुदाय में हुआ। राजस्थान की आन, बाण, शान कही जाने वाली प्रसिद्ध कालबेलिया नर्तकी गुलाबो ने अपने नृत्यकला से राजस्थान की कला और संस्कृति को राजस्थान ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। नर्तकी गुलाबो सपेरा को राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित किया जा चुका है।

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "RPSC RAS (PRE.)" की परीक्षा_ में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे, जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 7014366728,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/ras-pre-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें →	https://wa.link/6r99q8